Chapter-5

पंचम अध्याय

गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व - १ कृति परिचय

प्राक्कथन

चतुर्थ अध्याय में गोविन्द गिल्ला भाई के जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व का अध्ययन कर लेने के पश्चात् सम्प्रति उनके कृतित्व पर विचार किया जा सकता है। अपने व्यापक अर्थ में कृतित्व व्यक्ति की समूची क्रियात्मक चेतना का प्रतीक माना जा सकता है, परन्तु साहित्य के विद्यार्थी के लिए व्यक्ति का साहित्यिक कृतित्व ही मूलत: महत्वपूर्ण होता है। गोविन्द गिल्ला भाई के जिस साहित्यिक कृतित्व का अध्ययन का उपक्रम किया जा रहा है, उसका सम्बन्ध उनके व्यक्तित्व के सृजनात्मक पक्ष से ही है।

गोविन्द गिल्ला भाई के उक्त साहित्यिक कृतित्व के स्वरूप तथा उसकी व्याप्ति एवं महत्त्व को स्पष्टत: समझने के लिए यह परमावश्यक है कि सर्व प्रथम उनकी कृतियों का परिचय प्राप्त कर लिया जाय। क्योंकि वे ही इस समय उनके साहित्यिक कृतित्व की एक मात्र प्रमाण हैं। वस्तुत: कृतियाँ कृतित्व की परिणाम होती हैं, परन्तु कर्ता के अभाव में उन्हीं के आधार पर कर्ता के कृतित्व का अनुमान किया जा सकता है। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई की कृतियों के आधार पर ही उनके कृतित्व के स्वरूप तथा उसकी प्रमुख धाराओं को समझा जा सकता है एवं कृतियों के मूल्य तथा महत्त्व के आधार पर ही गोविन्द गिल्ला भाई के साहित्यिक

कृतित्व का मूल्यांकन किया जा सकता है । अत: प्रस्तुत अध्याय में गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त कृतियों का परिचय प्राप्त किया जा रहा है । क्योंकि इनकी कृतिया अनेक हैं तथा अनेक रूपों में उपलब्ध हुई हैं । अत: प्रस्तुत अध्याय में केवल इनकी कृतियों का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके आधार पर आगामी अध्याय में इनके कृतित्व पर विचार किया जा सके ।

प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन क्रम इस प्रकार होगा -

१- गोविन्द गिल्ला भाई की कृतियों का उल्लेख तथा उपलब्धि ।

२- उपलब्ध प्रमुख कृतियों का परिचय

(१) अध्ययन की आधार भूत प्रति

(२) वर्ण्य विषय

(३) छंद विश्लेषण

(४) रचना काल

३- शेष साहित्य

४- उपसंहार

१। गोविन्द गिल्ला भाई की कृतियों का उल्लेख तथा उपलब्धि

गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त कृतियां न प्रकाशित ही हुई हैं, न उपलब्ध ही हैं । परन्तु उनका उल्लेख स्वयं कवि द्वारा तथा अन्य लेखकों द्वारा अवश्य मिलता है । हिन्दी के जिन इतिहासकारों तथा अन्य लेखकों ने गोविन्द गिल्ला भाई के विषय में लिखा है[१], उन्होंने इनकी कृतियों के विषय में भी अवश्य लिखा है।

१- द्रष्टव्य है चतुर्थ अध्याय, पृ०८८-८९ । २३४-२३५

परन्तु इन उल्लेखों में सर्वत्र समानता नहीं है । साथ ही स्वयं गोविन्द गिल्ला भाई ने अपनी प्रकाशित रचनाओं तथा हस्तलिखित रचनाओं में, जो उपलब्ध हो सकी हैं, अपनी रचनाओं का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है । अत: यहां हिन्दी के विद्वानों द्वारा उल्लिखित गोविन्द गिल्ला भाई की रचनाओं की चर्चा न कर, सीधे स्वयं गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा उल्लिखित रचनाओं की चर्चा की जा रही है, क्योंकि अपनी कृतियों के विषय में स्वयं कर्ता द्वारा किये गये उल्लेख ही सर्वाधिक प्रामाणिक माने जा सकते हैं । यहां यह जान लेना भी आवश्यक है कि हिन्दी के किसी भी विद्वान् ने अब तक गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त कृतियों का उल्लेख तथा विवेचन नहीं किया है । अत: गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किये गये अपनी रचनाओं के उल्लेखों के आधार पर उनकी रचनाओं की नामावली सर्वप्रथम यहां प्रस्तुत की जा रही है, जिसका उपलब्ध रचनाओं के साथ तारतम्य स्थापित कर, आगे उपलब्ध कृतियों का सविस्तार परिचय प्राप्त किया जायेगा ।

१।२ गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा उल्लिखित कृतियां

१- विष्णु विनय पच्चीसी
२- परब्रह्म पच्चीसी
३- विवेक विलास
४ - लच्छन बत्तीसी
५- शिखनख चंद्रिका
६- राधा रूप मंजरी
७- भूषण मंजरी
८- शृंगार षोडशी
९- राधा मुख षोडशी
१०- पयोधर पच्चीसी
११- नैन मंजरी
१२- छवि सरोजिनी
१३- प्रबोध पच्चीसी

१५- वक्रोक्ति विनोद

१६- गोविन्द ज्ञान बावनी

१७- पावस पयोनिधि

१८- शृंगार सरोजिनी

१९- षट् ऋतु वर्णन

२०- प्रारब्ध पचासा

२१- श्लेष चंद्रिका

२२- रत्नावली रहस्य

२३- बोध बत्तीसी

२४- शब्द विभूषण

२५- भक्ति कल्पद्रुम

२६- अन्योक्ति अरविन्द

२७- अलंकार अंबुधि

२८- प्रवीण सागर बारह लहरी

२९- समस्या पूर्ति प्रदीप

३०- साहित्य चिन्तामणि प्रथम भाग किंवा नीति विनोद संग्रह

३१- गोविन्द हजारा संग्रह

३२- प्रेम प्रभाकर संग्रह

३३- साहित्य रत्नाकर संग्रह

अपनी रचनाओं की उक्त नामावली कवि ने समान रूप से अनेक स्थानों पर दी है[१] जो अधिकांश में मौलिक रचनाएं हैं तथा उपलब्ध भी हैं।

एक स्थान पर गोविन्द गिल्ला भाई ने उक्त तीन काव्य संग्रहों के अतिरिक्त अन्य काव्य संग्रहों के विषय में जो उल्लेख किये हैं, वे इस प्रकार हैं कि उनके विषय

१- स्मरण पोथी , पृ० ६३-६४।
पृ० ६५-६८।
प्रशस्ति , पृ० १४-१५।

में कुछ भी निश्चित करना कठिन प्रतीत होता है, अत: कवि द्वारा दी गयी विविध काव्य संग्रह की एक सूची से अपने काव्य संग्रहों के विषय में जो उन्होंने लिखा है उसे उनके शब्दों में यहां प्रस्तुत किया जा रहा है[1]:

नंबर	ग्रंथ नाम	कवि संख्या	छपा या लिखा	संग्रह कर्ता कवि नाम
१२	हिन्दी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	१५६	लिखा	गोविन्द गिल्ला
१३	व्रजभाषा के कवित्त संग्रह	१२०	,,	,,
१४	गोविन्द हजारा	१४०	,,	,,
१५	साहित्य चिंतामणि	२२५	,,	,,
१६	प्रेम प्रभाकर	६५	,,	,,
१७	कवि और कविता प्रथम भाग	३१५	,,	,,
१८	कवि और कविता द्वितीय भाग	२००	,,	,,
१९	गुनमाला के पुस्तक में	४०	,,	,,
२०	वज्रशुचिकोपनिषद वारे पुस्तक में	६५	,,	,,
२१	जसराम बावनी वारे पुस्तक में	६०	,,	,,
२२	भ्रांति भंजनी वारे पुस्तक में	४०	,,	,,
२३	फुटक काव्य संग्रह वारे पुस्तक में	८३	,,	,,
२४	हर्ष जी महेता कृत काव्य संग्रह वारे पुस्तक में	४०	,,	,,
२५	शुक रंभा वारे पुस्तक में	१५	,,	,,

१- कवि चरित्र और कविनामावली ह० प्र० सं० २०६ ।

इसी सूची को देखते हुए लगता यही है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने उक्त सभी काव्य संग्रह किये अवश्य होंगे, क्योंकि जिस प्रकार उक्त उद्धरण में प्रतियों का उल्लेख किया है, उससे यही लगता है कि प्रथम सात अवश्य ही संग्रह ग्रंथ कवि द्वारा तैयार किये गये होंगे। उनमें से दो प्राप्त हैं तथा एक प्रेम प्रभाकर का अनेक स्थानों पर उल्लेख है।[1] शेष के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी कहना, इसलिए कठिन है कि उनमें से न तो कोई किसी भी रूप में प्राप्त है और न उनके शीर्षक ग्रंथ शीर्षक जैसे हैं। हो सकता है कि इन प्रतियों में केवल कवि नामावली ही दी गयी हो, काव्य संग्रह न हो।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित मौलिक रचनाओं का उल्लेख भी मिलता है, जो कवि की प्रारंभिक अवस्था में गुजराती में लिखी गयी है तथा प्रकाशित भी हो चुकी है[2]:

१- विश्व दर्पण
२- कुधारा पर सुधारा नी चढाई
३- छिनाल बावनी

गोविन्द गिल्ला भाई ने अनेक संस्कृत ग्रंथों का गुजराती में अनुवाद किया है, जिसकी नामावली इस प्रकार दी गयी है[3]:

१- अमर कोष
२- अभिधान चिन्तामणि नाममाला हेम कोष
३- हेम शेष कोष
४- काव्य प्रकाश प्रथम उल्लास

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६४, ६५, ६८, प्रशस्ति, पृ० १४,१५।
२- गोविन्द ग्रंथमाला, प्रथम भाग, उपोद्घात, पृ० २०।
३- स्मरण पोथी, पृ० ३२।
प्रशस्ति, पृ० २३।

५- साहित्य दर्पण प्रथम तीन परिच्छेद
६- रस तरंगिणी भानुदत्त कृत
७- शृंगार रत्नाकर ताराचरण तर्क रत्न कृत
८- रस मीमांसा - गंगा राम कृत
९- वक्रोक्ति पंचाशिका कविरत्नाकर कृत
१०- अमर शतक
११- चौर पंचासिका
१२- वज्र शुचिकोपनिषद् शंकराचार्य कृत
१३- वात्सायन काम सूत्र की अनुक्रमणिका

इसके अतिरिक्त गोविन्द गिल्ला भाई ने कुछ अपनी तथा कुछ अन्य हिन्दी के प्राचीन कवियों की हिन्दी रचनाओं की टीकाएं की हैं, जो कुछ हिन्दी में तथा कुछ गुजराती में हैं जिनकी नामावली विभिन्न स्थानों पर इस प्रकार मिलती है[१] :

१- प्रबोध पच्चीसी की टीका	हिन्दी
२- वक्रोक्ति विनोद की टीका	,,
३- श्लेष चंद्रिका की टीका	,,
४- प्रवीण सागर की गोविन्द सुबोधिनी टीका	- गुजराती
५- किशन बावनी की टीका	,,
६- शिवराज शतक की टीका	,,
७- शिवराज भूषण की टीका	,,
८- रसराज की टीका	,,

१- स्मरण पोथी, पृ० ३१, ६३ ।

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त एक स्थान पर गोविन्द गिल्ला भाई कृत निम्न लिखित कोषों का उल्लेख और मिलता है[१]:

१- एकाक्षरी कोष

२- अनेकार्थ कोष

३- रस रत्नाकर

४- अनेकाक्षरी कोष

५- गोविन्दार्णव कोष

६- अंक अभिधान मंजरी

गोविन्द गिल्लाभाई ने समय समय पर गुजराती पत्र पत्रिकाओं में गुजराती में साहित्य सम्बन्धी लेख आदि तथा हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में हिन्दी कविता प्रकाशित कराई थी, उनका उल्लेख इस प्रकार एक स्थान किया है[२]:

१- हमीर हठावलोकन सुदर्शन नड़ियाद, गुजराती पत्रिका

२- ढोला मार नी वार्ता वाक्य सौंदर्य कराची गुजराती पत्रिका

३- गोविन्द ग्रंथमाला नी साहित्य समालोचना समाज जीवन बम्बई गुजराती पत्रिका

४- समस्या पूर्तिसंग्रह काशी कवि समाज काशी हिन्दी

५- ,, ,, कवि मंडल काशी ,,

६- ,, ,,मासिक, पटना, पटना कविसमाज

७- ,, ,,कवि ,, कानपुर, रसिक मित्र

८- सरस्वती प्रयाग

१- लघु डायरी १, पृ० ६।

२- स्मरण पोथी, पृ० ३४, ३५।

गोविन्द गिल्ला भाई ने अनेक हिन्दी काव्य ग्रंथों का सम्पादन किया था तथा अपने सम्पादित संस्करणों में अपनी भुमिका भी दी थी साथ ही कुछ हिन्दी काव्य ग्रंथों के संपादन तथा प्रकाशन की इन्होंने योजना बनायी, उसे किन्हीं कारणों से क्रियान्वित नहीं कर पाये थे। अत: यहां हम पहले उन ग्रंथों की नामावली दे रहे हैं, जिनके संपादन तथा प्रकाशन की इन्होंने योजना बनायी थी तथा जिसे इन्होंने अपने प्रकाशित ग्रंथों के साथ विज्ञाप्ति रूप में प्रकाशित किया है। बाद में उन ग्रंथों की नामावली दी जायेगी, जिनके प्रकाशन का इन्होंने उल्लेख किया है :

१। प्रथम विज्ञाप्ति[१] :

जाहिरात

गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग

वामें विष्णु विनय पचीशी १ परब्रह्म पचीशी २ विवेक विलास ३ लक्षण बत्तीसी ४ शिखनख चंद्रिका ५ राधा रूप मंजरी ६ भुषण मंजरी ७ शृंगार षोडशी ८ राजा मुख षोडशी ९ पयोधर पचीशी १० नैन मंजरी ११ कवि सरोजिनी १२ प्रेम पचीशी १३ प्रबोध पचीशी १४ हिन्दी कोष १५ यह ग्रंथ हैं।

रु० २-०-०

गोविन्द ग्रंथमाला दुसरा भाग

वामें शृंगार सरोजिनी नायक नायका भेद १ वक्रोक्ति विनोद सटीक २ श्लेष चंद्रिका सटीका ३ रत्नावली रहस्य सटीक ४ समस्या पुर्ति प्रदीप ५ पावस पयोनिधि ६ षट रितु वर्णन ७ प्रारब्ध पचासा ८ गोविन्द ज्ञान बावनी ९ प्रवीण सागर की बारह लहरी १० आदिक १० ग्रंथ हैं।

रु० २-०-०

१- स्व० संपादित शिवराज शतक के अन्तिम पृष्ठ पर सं० १९७२ में सरस्वती प्रेस भावनगर से प्रकाशित।

गृंथ रत्न माला प्रथम भाग

वामे नेह निदान १ नेह निर्वाह २ नवल नेह ३ तिलक शतक ४ शृंगार तिलक ५ मान पचीशी ६ रसिक पचीशी ७ गोपी पचीशी ८ कुब्ज्या पचीशी ६ प्रताप पचीशी १० घूस बत्तीसी ११ बंशी बीसा १२ हस्तामलक भाषा १३ सुदामा चरित्र १४ यह आदिक अनेक प्राचीन कविन के बनाये हुये गृंथों का संग्रह है।

रु० १-४

२। द्वितीय विज्ञाप्ति[१]

जाहिरात

नीचे लिखे हुये गृंथ हमारी पास मिलेंगे, जिन महाशय कों लेना होय वह हमारी पर पत्र लिख कें मंगाय शक्ते हैं।

गृंथ नाम	किम्मत

गोविन्द गृंथमाला, उनका प्रथम भाग में विष्णु विनय पचीशी १ परब्रह्म पचीशी २ विवेक विलास ३ लक्षन बत्तीशी ४ शिखनख चंद्रिका ५ राधा रूप मंजरी ६ भूषण मंजरी ७ शृंगार षोडशी ८ राधा मुख षोडशी ६ पयोधर पचीशी १० नैन मंजरी ११ छवि सरोजिनी १२ प्रेम पचीशी १३ और प्रबोध पचीशी १४ यह चौदह गृंथ हैं।

किम्मत रु० २-०-०

गोविन्द गृंथमाला दूसरा भाग अब पीछें	२-०-०
साहित्य चिन्तामणि, प्रथम प्रकरण नीति विनोद छपता है	२-०-०
साहित्य चिन्तामणि दूसरा प्रकरण तयार होता है	३-०-०

१- स्व संपादित गोविन्द गृंथमाला प्रथम भाग, पृ० ४४३।
सं० १६६७ राजकोट से प्रकाशित।

अमृत धारा वेदान्त भागवान दास निरंजनी कृत	१-०-०
प्रवीन सागर गुजराती टीका सहित छपता है	५-०-०
प्रवीन सागर मूल व्रज भाषा में ,,	३-०-०
शिवराज भूषण गुजराती टीका सहित ,,	१-४००
शिवराज शतक शिवराज बावनी सहित ,,	०-४-०
रसराज मतिराम कृत गु० टीका सहित	१-८-०
किशन बावनी गुजराती अर्थ सहित	०-८-०

मिलने का पता
कवि गोविन्द गिल्ला भाई
मु० सिहोर
देश काठियावाड, जिला भावनगर

उक्त विज्ञाप्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने हिन्दी के अनेक प्राचीन ग्रंथों के संपादन तथा प्रकाशन की एक योजना बनायी थी, परंतु किन्हीं कारणों से उसे वे क्रियान्वित नहीं कर सके। जिन ग्रंथों का इन्होंने संपादन तथा प्रकाशन करने का उल्लेख किया है, उनकी नामावली इस प्रकार है[१] :

१- विश्व दर्पण	गुजराती
२- कुधारा पर सुधारा नी चढ़ाई -	,,
३- व्यभिचार निषेध बावनी	,,
४- विवेक विलास	हिन्दी
५- अमृत धारा भावानदास निरंजनी कृत	,,
६- गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग,,	
७- प्रवीणसागर-महेरामाणा सिंह कृत - हिन्दी	
८- किशन बावनी, किशन कवि कृत - ,,	

१- स्मरण पोथी, पृ० ७, ८, २१, २३, २४ आदि।

९- शिवराज शतक, भूषण कृत-   हिन्दी
१०- ढेला मार नी वार्ता-   ,,

उक्त सूची की अंतिम रचना कराची से प्रकाशित "वाक्य सौन्दर्य" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई है, शेष सभी स्वतंत्र ग्रंथ रूप में प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त कवि कहानजी धर्मसिंह द्वारा संगृहीत तथा प्रकाशित साहित्य रत्नाकर के द्वितीय संस्करण में सं० १९६३ में तथा ठाकुर चतुरसिंह जी, बीकानेर, के सोरठा संग्रह, जो सं० १९७२ में प्रकाशित हुआ है, के संपादन में गोविन्द गिल्ला भाई ने सहायता की थी[१]।

गोविन्द गिल्ला भाई के साहित्यिक कृतित्व की आधारभूत सामग्री का जो उल्लेख ऊपर किया गया है वह मुख्यत: उनकी डायरी तथा स्मरण पोथी के आधार पर है, साथ ही उनकी प्रकाशित उपलब्ध रचना गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग आदि का भी सहारा लिया गया है, क्योंकि उक्त सभी उल्लेख स्वयं लेखक की रचनाओं पर आधारित हैं/अत: उनकी विश्वसनीयता पर किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती।

१।३ गोविन्द गिल्ला भाई की उल्लिखित तथा उपलब्ध कृतियों का तारतम्य

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा उल्लिखित जिस सामग्री का ऊपर आलेख किया जा चुका है, सम्पूर्णत: उपलब्ध नहीं है। उपलब्ध सामग्री[२] में कुछ कृतियां ऐसी भी हैं, जिनका उल्लेख नहीं मिलता। अत: उल्लिखित तथा उपलब्ध कृतियों की तुलना करने पर समस्त सामग्री तीन कोटियों में विभक्त हो जाती हैं :

१- स्मरण पोथी, पृ० २०, २४।
२- गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त उपलब्ध सामग्री म० स० विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आचार्य कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह के सत्प्रयासों से सुरक्षित हो सकी है तथा कुछ सामग्री भावनगर के एक चारण के पास है। भावनगर की समस्त सामग्री प्रस्तुत लेखक को अप्राप्य रही है।

(१) ऐसी सामग्री जो समान रूप से उल्लिखित तथा उपलब्ध है ।

(२) ऐसी सामग्री जो उल्लिखित है, परन्तु उपलब्ध नहीं है ।

(३) ऐसी सामग्री जो उल्लिखित नहीं है, परन्तु उपलब्ध है ।

प्रथम प्रकार की सामग्री के विषय में किसी प्रकार की कोई समस्या उठ नहीं सकती, अत: अंतिम दोनों प्रकार की सामग्री के विषय में यहां संक्षेपत: विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है ।

द्वितीय प्रकार की सामग्री निम्नलिखित है :

१- प्रेम प्रभाकर- संग्रह
२- साहित्य रत्नाकर ,,
३- विश्व दर्पण- गुजराती रचना
४- कुधारा पर सुधारा नी चढ़ाई - गुजराती रचना
५- छिनाल बावनी - ,,
६- अभिधान चिन्तामणि नाममाला हेम कोष अनुवाद
७- हेम शेष कोश - ,,
८- काव्य प्रकाश प्रथम उल्लास ,,
९- साहित्य दर्पण प्रथम तीन परिच्छेद ,,
१०- रस तरंगिणी भानुदत्त कृत ,,
११- शृंगार रत्नाकर ताराचरण तर्क रत्न कृत ,,
१२- रस मीमांसा गंगाराम कृत ,,
१३- वक्रोक्ति पंचाशिका कवि रत्नाकर कृत ,,
१४- वज्र शुचिकोपनिषद् शंकराचार्य कृत ,,
१५- वात्सायन कामसूत्र की अनुक्रमणिका ,,
१६- छिनालबावनी टीका सहित
१७- रसराज ,,
१८- एकाक्षरी कोष
१९- अनेकार्थ कोष

२०- रस रत्नाकर

२१- अनेकाक्षरी कोष

२२- गोविन्दार्णव कोष

२३- अंक अभिधान मंजरी

२४- अमृत धारा

२५- हमीर हठावलोकन

२६- साहित्य समालोचना गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग की/तृतीय

तृतीय प्रकार की सामग्री निम्नलिखित है :

१- संस्कृत श्लोकों पर से भाषा में रचे गये छंदों का संग्रह अपूर्ण

२- यश वर्णन

३- फुटकर रचनाएं

४- सुबोध शतक अपूर्ण

५- शांतरस वैराग्य के फुटकर कवित्त

६- चित्र काव्य संग्रह

७- अलंकारोदधि

८- पिंगल प्रकरण

९- गोविन्द गद्य साहित्य

१०- काव्य निरूपण

११- आशक पच्चीसी

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा उल्लिखित अधिकांश सामग्री उपलब्ध होती है।[१] अत: द्वितीय प्रकार की सामग्री की विश्वसनीयता के विषय में किसी प्रकार की

१- यह बात यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्लाभाई के उपलब्ध साहित्य में अनेक प्राचीन कवियों की हस्तलिखित रचनाओं की प्रतिलिपि, तथा उनके सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का संग्रह भी है, जो तृतीय प्रकार की सामग्री के अन्तर्गत आता है तथा इनके कृतित्व के एक विशेष पक्ष का परिचायक है। परन्तु उसकी चर्चा यहां नहीं की गयी, आगे की जायेगी ।

शंका के लिए अवकाश नहीं रहता । साथ ही काव्य प्रकाश एवं साहित्य दर्पण के अनुवादों का कुछ अंश अनुल्लिखित परन्तु उपलब्ध ग्रंथ गोविन्द गद्य साहित्य में मिल जाता है[१]। इसी प्रकार एकाक्षरी कोष, अनेकार्थ कोष, अनेकाक्षरी कोष तथा अंक अभिधान मंजरी भी उक्त ग्रंथ में मिल जाते हैं[२]। ये कोष इस ग्रंथ में भी पूर्ण नहीं हैं परन्तु वात्सायन के कामसूत्र की अनुक्रमणिका पूर्ण प्राप्त हो जाती है[३], इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि द्वितीय कोटि की सभी रचनाएं गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा लिखी अवश्य गयी थी, हो सकता है कि इनमें से कुछ रचनाएं अपूर्ण रह गयी हों । अत: यह तथ्य इनके कृतित्व की व्यापकता के प्रतिपादन में बाधक नहीं माना जा सकता ।

जहां तक तृतीय कोटि की रचनाओं का संबंध है, अनुल्लिखित होने के कारण उन की प्रामाणिकता के विषय में कुछ अंशका की जा सकती है, परन्तु कवि के हस्ताक्षरों में इन रचनाओं के लिपिबद्ध होने के कारण, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ये रचनाएं गोविन्द गिल्ला भाई की हैं, परन्तु उन्होंने इनका उल्लेख निम्नलिखित कारणों से नहीं किया, सिद्ध किया जा सकता है ।

तृतीय प्रकार की सामग्री की अधिकांश रचनाएं अपूर्ण हैं, जिनमें प्रथम प्रकार की सामग्री की रचनाओं के समान पुष्पिकाएं नहीं मिलतीं ।

संस्कृत श्लोकों पर से भाषा में रचे गये छन्दों का संग्रह, फुटकर रचनाएं, सुबोध शतक, शान्त रस वैराग्य के फुटकर कवित्त, चित्र काव्य संग्रह, अलंकारोदधि, आशक पच्चीसी के सभी छंद अन्य रचनाओं में मिल जाते हैं, जिससे इनके कर्ता गोविन्द गिल्ला भाई ही सिद्ध होते हैं ।

१- देखिए : गोविन्द गद्य साहित्य, पृ० १, ४ ।

२- वही, पृ० ५ से १३ आदि ।

३- वही, पृ० ५० आदि ।

पिंगल प्रकरण, काव्य निरूपण वस्तुत: ग्रंथ नहीं हैं, अपितु पिंगल तथा काव्य सम्बन्धी हिन्दी तथा संस्कृत के प्राचीन आचार्यों द्वारा दिये गये लक्षणों के संग्रह मात्र हैं, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कवि ने अपने ग्रंथों में विनियोग किया है।

आशय यह कि तृतीय कोटि में उक्त समस्त साहित्य गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा ही विरचित है।

अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा रचित कुछ साहित्य आज अप्राप्य है, परन्तु उसका अधिकांश भाग प्रामाणिक रूप में उपलब्ध हैं। यद्यपि उपलब्ध साहित्य की बहुलता एवं बहुविधिता ही इनके कृतित्व की व्यापकता को सिद्ध कर देती है, परन्तु उसके यथार्थ स्वरूप के परिज्ञान तथा मुल्यांकन के लिए यह आवश्यक है कि इनकी उपलब्ध समस्त कृतियों का सविस्तार परिचय प्राप्त कर लिया जाय, अत: आगे इस अध्याय में गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त उपलब्ध कृतियों का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

२। उपलब्ध प्रमुख कृतियों का परिचय

२।१ विष्णु विनय पच्चीसी

२।१।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

विष्णु विनय पच्चीसी, सम्प्रति, तीन रूपों में उपलब्ध है, १- उद्धरण रूप में, २- प्रकाशित रूप में, ३- हस्तलिखित प्रति के रूप में। इस रचना का प्रथम रूप दो हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त होता है। हस्तलिखित प्रति सं० १८८ में इस रचना के चार छंद, क्रमश: छंद संख्या ५, १८, १६, २१ तथा हस्तलिखित प्रति सं० १६४ में तीन छंद क्रमश: छंद संख्या ५, १७, १६ उपलब्ध होते हैं। द्वितीय रूप गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग में पृ० २३ से २६ तक में उपलब्ध होता है,[१] जिसमें कुल २६ कवित्त हैं।

१- गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग सं० १६६७ में राजकोट से प्रकाशित हुई है।

अपने अंतिम रूप में यह रचना दो हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त होती है प्रथम हस्तलिखित प्रति सं० १७८ में पृ० २३ से ४१ तक यह रचना है , जिसके साथ साथ इसी जिल्द में बोध बत्तीसी, प्रारब्ध पचासा, पर ब्रह्म पच्चीसी तथा प्रबोध पच्चीसी भी हैं । इस प्रति में सभी रचनाओं की गुजराती टीका भी हैं । द्वितीय प्रति हस्तलिखित प्रति सं० १७०में पृ० १५ से १६ तक प्राप्त होती हैं । इस प्रति में इस रचना के पुर्व पृ० १ से १३ तक मंगलाचरण के ७५ छंद दिये गये हैं तथा इस रचना के पश्चात् क्रमशः परब्रह्म पच्चीसी तथा विवेक विलास नामक रचना हैं । उक्त दोनों प्रतियों की पुष्पिकाओं में लिपिकाल का निर्देश नहीं है । परन्तु द्वितीय प्रति के मुल पृष्ठ पर प्रति के लेखन काल सं० १६७६ का उल्लेख है ।[1] प्रथम प्रति की जिल्द में इस रचना के पुर्व बोध बत्तीसी तथा प्रारब्ध पचासा नामक रचनाएं हैं, जिनका रचनाकाल क्रमशः सं० १६७३ तथा १६६६ है ।[2] इससे यह अनुमान किया जा सक्ता है कि इस प्रति में इस रचना का लेखन काल सं० १६७३ के पश्चात ही होगा ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत रचना की प्राप्त सामग्री तीन विभिन्न समयों की हैं :

(१) सं० १६६७ से पुर्व : गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग में प्रकाशित
(२) सं० १६७३ के पश्चात : हस्तलिखित प्रति सं० १७८
(३) सं० १६७६ में लिखित : हस्तलिखित प्रति सं० १७०

यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि उक्त तीन समयों की प्रतियों में से अन्तिम प्रति को ही हम अपने अध्ययन की आधार भुत प्रति मान सक्ते हैं, क्योंकि अंततोगत्वा कवि को अपनी इस रचना का यही रूप स्वीकार्य है । यद्यपि यह प्रति इस रचना के मुल लेखन काल के बहुत पश्चात की है, तथापि जिस पाठ को कवि ने अंतिम रूपसे मान्य रखा है, वही पाठ हमें भी स्वीकार्य है ।

१- देखिए ह० प्र० सं० १७० मुल पृष्ठ ।
२- ,, ह० प्र० सं० १७६, १७७ पृ० १३, ३२ क्रमशः ।

उपरोक्त तीनों प्रतियों की तुलना करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इन प्रतियों की छंद संख्या तथा उनके क्रम में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। परन्तु कुछ पाठान्तर अवश्य मिलते हैं, जिन पर संक्षेपत: यहां विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है :-

(१) सम्पति करन औंर दारिद दरन सदा	'गोविन्द ग्रंथमाला' पृ० २४ छं०३।१
सम्पति करन शुभ दारिद दरन सदा	ह०प्र० सं०१७८, १७० पृ०३३, १५ क्रमश: छं० ३।१
गोविद कहत ऐसे वारिज वरन बारे	गो० ग्रं० पृ० २४ छं० ३।४
गोविद कहत ऐसे विद्रुम वरन बारे	ह० प्र०सं० १७८, १७० पृ०३३, १५ क्रमश: छं० ३।४
(२) शब्दक्रम अन्तर :	
चंद सूर आदि केते नभचर नभ मांहि	गो०ग्रं०पृ० २४ छं० ४।२
नभचर नभ मांहि चंद सूर आदि केते	ह० प्र०सं० १७८, १७० पृ० ३३, १५ क्रमश: छं० ४।२
औषधि अचल आदि भूतल मे भाय भले	गो०ग्रं० पृ० २४ छं० ४।२
भूतल में भाय भले औषधि अचल आदि	ह० प्र० सं० १७८, १७० पृ० ३३, १५ क्रमश: छं० ४।३

इस तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित इस रचना में ही कवि ने कुछ परिवर्तन किए हैं, जो दोनों परवर्ती हस्तलिखित प्रतियों में समान रूप से मान्य रखे हैं। साथ ही ये पाठान्तर महत्वपूर्ण नहीं हैं, अत: अन्तिम प्रति के आधार पर इस रचना का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

२।१।२ वर्ण्य विषय

ह०प्र०सं० १७० के पृ० १५ से १६ तक विष्णु विनय पच्चीसी नामक रचना में विष्णु संबंधी पच्चीस छंद तथा एक छंद कवि तथा उसकी इस रचना के विषय में मिलता है । प्रारम्भ में कुछ छंद विष्णु की सामर्थ्य, शक्ति तथा माहात्म्य निरूपण परक हैं,[1] फिर उसके स्वरूप के विषय में कुछ छंद हैं,[2] जिनके पश्चात विष्णु को इष्ट देव के रूप में निरूपित कर, उसके प्रति अनेक छंदों में विनय भाव व्यक्त किया गया है[3]। अन्तिम छंद में कवि ने अपना तथा अपनी इस रचना का परिचय प्रयोजन बताया है[4]।

२।१।३ छंद विश्लेषण

छंद नाम	संख्या	योग
कवित्त	२६	२६

२।१।४ रचना काल

इस रचना के रचनाकाल के विषय में कवि ने रचना के अंत में कहा है कि :

अब्द उनीश और सेंतिस के पूश माँहि
चित्त में सुखद चाहबिष्णु ने प्रकाशी है ।
गोविंद कहत तब भक्ति रस शीशी विभु
विनय पचीशी येहि पूरन प्रकाशी है[5]

१- विष्णु विनय पच्चीस छं० १, २ आदि ।

२- वही, छं० ७, ८ आदि ।

३- वही, छं० १३ से २५ तक

४- वही, छं० २६ ।

५- वही ।

२।२ परब्रह्म पच्चीसी

२।२।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना की स्थिति विष्णु विनय पच्चीसी की स्थिति के बिलकुल समान है, अत: यहां सभी तथ्यों का सविस्तार उल्लेख न कर आवश्यक बातों का ही विचार किया जायगा। ह०प्र०सं० १९४ में इस रचना के तीन छंद क्रमश: छंद संख्या ७, ६, २४ तथा ह०प्र०सं० १८८ में पांच छंद क्रमश: छंद संख्या ७, ६, १०, २४, २५ उद्धृत किये गये हैं। गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० ३२ से ४० तक यह रचना प्रकाशित रूप में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त ह० प्र० सं० १७९ में पृ० ४२ से ५१ तक तथा ह० प्र० सं० १७० में पृ० २१ से २५ तक यह रचना पूर्णत: प्राप्त होती है। अत: विष्णु विनय पच्चीसी के समान इस रचना की अंतिम प्रति ह०प्र०सं० १७० को अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत रखा जा सकता है।

उपलब्ध तीनों पूर्ण प्रतियों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि इस रचना के केवल एक ही छंद के पाठ में ही कुछ पाठान्तर मिलता है, अन्य सभी छंदों तथा उनके क्रम में पूर्ण समानता है। छंद संख्या २२ में जो अन्तर है वह इस प्रकार है :

(१) ज्यौंहि रथ पहिया के नाभि और नेमिन में।	गो०ग्रं०पृ० ३९ छं० २२।१
जैसें रथ पहिया के नाभि और नेमिन में।	ह०प्र०सं० १७९, १७० छं०२२।१
और ब्रहंड केते गोविद कहात।	गो०ग्रं० पृ०३९ छं०२२।२
और ब्रहंड केते जग में जनात है।	ह०प्र०सं० १७९, १७० छं०२२।२
गोविद कहत ऐसें अखिल के आशरय,	
निगम निरंजन सो विमल विभात है।	गो० ग्रं० पृ०३९ छं०४।४
गोविद कहत ऐसें सर्व भूत सर्व जीव,	
सर्व प्राण समुदाय प्रगट विभात है।	ह०प्र०सं० १७९छं०२२।३
	,, १७० छं० २२।४

ह०प्र०सं० १७० ~~के~~ प्रस्तुत छंद के चतुर्थ पाद को ह०प्र०सं० १७६ में तृतीय पाद के रूप में लिखा गया है तथा तृतीय पाद को चतुर्थ पाद के रूप में। इसके अतिरिक्त इस रचना की विभिन्न प्रतियों के पाठों में पूर्ण समानता है।

२।२।२ वर्ण्य विषय

ह०प्र०सं०१७० के पृ० २१ से २५ तक प्रस्तुत रचना छब्बीस छंदों में आबद्ध है। प्रथम कवि ने नमस्कारात्मक मंगलाचरण के कुछ छंद लिखे हैं[१] तथा अन्तिम दो छंदों को छोड़ कर शेष सभी छंदों में ब्रह्म के अनिर्वचनीय स्वरूप का चित्रण किया है,[२] अन्तिम छंदों में विनय भाव के साथ साथ आत्म परिचय तथा कृति के रचनाकाल का निर्देश आदि किया है।[३]

२।२।३ छंद विश्लेषण

छंद नाम	संख्या	योग
कवित्त	२६	२६

२।२।४ रचनाकाल

इस रचना के अन्त में कवि ने इसका रचनाकाल सं० १६३७ मार्ग सुध सप्तमी लिखा है।[४]

२।३ विवेक विलास

२।३।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

गोविन्द गिल्ला भाई की यह कृति भी पूर्वोक्त कृतियों के समान उक्त तीन रूपों में ही प्राप्त होती है। ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के तेरह छंद तथा ह०प्र०सं०१८२

१- परब्रह्म पच्चीसी, छं० १,२,३।

२- वही, छं० ४ से २४ तक।

३- वही, छं० २५,२६।

४- वही, छं० २६।

में एक सौ दो छंद उद्धृत रूप में प्राप्त होते हैं । इसके अतिरिक्त गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने सभी संग्रह ग्रंथों में इस रचना में से अनेक छंद उद्धृत किये हैं । गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० ४१ से १४१ तक ३१३ छंदों में यह रचना प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं । इसके अतिरिक्त ह०ग्रं०प्र०सं० १७० में इस ग्रंथ की एक पूर्ण प्राय: प्रति प्राप्त होती है, इस प्रति में यद्यपि छंद संख्या अन्य सभी प्रतियों की छंद संख्या से अधिक है, तथापि इस प्रति में इस ग्रंथ को पूर्ण नहीं कहा जा सकता । क्योंकि एक तो इस प्रति के अंत में ग्रंथ समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं है, साथ ही इस प्रति की लेखन शैली ऐसी है कि जिससे इस प्रति की अपूर्णता ही सिद्ध होती है । इस प्रति के पृ० १ से ११४ तक ४५८ छंद हैं, जिसके पश्चात् इस ग्रंथ की विषय सूची पांच पृष्ठों में है । इसके पश्चात 'विवेक विलास का बढारा '(विस्तार) नाम से पुन: ग्रंथ प्रारम्भ हो जाता है, जो छंद संख्या ४७१ पर पृ० १२२ पर बिना किसी पुष्पिका के समाप्त हो जाता है तथा शेष सभी पृष्ठ खाली छोड़ दिये गये हैं । इसलिए इस प्रति को इस ग्रंथ की पूर्ण प्रति नहीं माना जा सकता ।

इसके अतिरिक्त ह०प्र०सं०१७१ में 'विवेक विलास नो बढारो '(विवेक विलास का विस्तार) नाम से १८ पृष्ठों की एक प्रति और मिलती है, जिसकी पृष्ठ संख्या एक ओर १ से १२ तक चलती है तथा दूसरी ओर १ से ५ तक चलती है । बीच में एक पृष्ठ खाली है । एक ओर प्रथम पृष्ट पर 'विवेक विलास नो बढारो' लिखा है तथा दूसरी ओर प्रथम पृष्ट पर 'अथ श्री साहित्य चिंतामणि ग्रंथ ना नीति विनोद मां वधारे दाखल करवा धारेल कवित्त संग्रह नीचे लख्यो छे '(अथ श्री साहित्य चिंतामणि ग्रंथ के नीति विनोद में अधिक छंदों का समावेश करने के लिए कवित्त संग्रह नीचे लिखा है) लिखा है 'विवेक विलास नो वधारो 'शीर्षक के नीचे लिखे हुए छंदों में अनेक छंद अन्य कवियों के भी हैं तथा गोविन्द गिल्ला भाई के जो छंद इसमें हैं वे ह० प्र० १७० में पहले ही मिल जाते हैं । साथ ही विवेक विलास के इस 'वढारे 'तथा ह०प्र०१७० में प्राप्त 'वढारे में कोई सम्बन्ध नहीं है । इससे

यही अनुमान लगाया जा सकता है कि ह० प्र० १७१ का वढारा विवेक विलास का वढारा न होकर साहित्य चिन्तामणि के लिए विवेक विलास में से लिये गये छंदों का वढारा है ।

इस विवेचन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत रचना समय समय पर विकसित होती गयी है, यह तथ्य इस रचना के विषय में गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किये गये विभिन्न कथनों से सिद्ध हो जाती है । अत: इस रचना के लेखन समय तथा उसके क्रमिक विकास के विषय में स्पष्टत: विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है ।

गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त रचनाओं में यह रचना सर्वप्रथम तथा अंतिम रचना कही जा सकती है । क्योंकि सं० १६२० से लेकर सं० १६८० तक के प्राय: सभी नीति विषयक फुटकर छंद इस रचना में संगृहीत हैं[१] । साथ ही उक्त समयों से पूर्व तथा पश्चात की न कोई रचना उपलब्ध है न उल्लिखित । इस समय सीमा में इस रचना का विकास किस प्रकार हुआ । इस विषय में उपलब्ध सामग्री के आधार पर निम्नलिखित अनुमान किये जा सकते हैं ।

(१) प्रथम विकास खंड (सं० १६२० से १६२७ तक)

१६२० से लेकर १६२७ तक के नीति विषयक छंदों का संग्रह लच्छन बत्तीसी ग्रंथ के साथ गोविन्द काव्य अंक २ के रूप में विवेक विलास नाम से भावनगर से प्रकाशित हुआ था । परन्तु आज इस प्रकाशित पुस्तक के अप्राप्य होने के कारण इसकी छंद संख्या आदि के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

(२) द्वितीय विकास खंड (सं० १६२० से १६५१ तक)

नीति के ३१३ छंदों का संग्रह, जो सं० १६६७ में गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित हुआ है । इस ग्रंथ के अंत में कवि ने लिखा है कि

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३ ।

संवत उन्नीश बीश तें एकावन लौं जान
किये कवित जिहि नीति के सो सब यामें मान[1]

(३) तृतीय विकास खंड (१६२० या १६२५ से १६७८ तक)

सं० १६६७ में प्रकाशित विवेक विलास के ३१३ छंदों में ८७ छंदों की वृद्धि हुई तथा इसकी छंद संख्या ४०० हो गयी। यह छंद संख्या सं० १६६१ तक ही हो गयी होगी, क्योंकि एक स्थान पर[2] इसकी छंद संख्या ४०० तथा रचना काल १६२० से १६६१ लिखा है। इसी प्रकार सं० १६७८ में माधुरी में प्रकाशित एक लेख में विवेक विलास की छंद संख्या ४०० तथा रचना काल सं० १६२५ से १६७८ लिखा गया है[3]। जिससे अनुमान किया जा सकता है कि सं० १६७८ तक विवेक विलास की छंद संख्या ४०० थी।

(४) चतुर्थ विकास खंड (सं० १६२० से १६८० तक)

सं० १६७८ के पश्चात् इस रचना में ५८ छंदों का समावेश और हुआ तथा इसकी छंद संख्या ४५८ हो जाती है[4]। इसके बाद पुन: इसकी छंद संख्या बढ़ती है, सम्भवत: वढारा के रूप में। और ह० प्र० सं० १७० में वढारा सहित कुल छंद संख्या ४७७ हो जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि विवेक विलास क्रमश: विकसित होता गया है। एक स्थान पर कवि ने इसके विषय में लिखा है कि विक्रम संवत् १६२० ते ले के संवत् १६५१ की साल तक अर्थात् ३२ वर्ष तक हमने प्रसंगानुसार फुटकर कवित्त कोई कोई समय पर नीति विषयक जितने बनाये थे, उनको यथाक्रम संकलित

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० १४१।

२- स्मरण पोथी, पृ० ६३।

३- माधुरी अंक ८, पृ० १७५, सं० १६७८।

४- स्मरण पोथी, पृ० ६३, विवेक विलास विशेष हकीकत, ह०प्र०सं० १७०, पृ० ११३।

करके वाको नाम विवेक विलास रख दिया है[१]। गोविन्द गिल्ला भाई के इस कथन में यथा क्रम शब्द का अर्थ यथा कालक्रम लिया जाय तो गोविन्द ग्रंथ माला में प्रकाशित विवेक विलास इनके उक्त ३२ वर्ष के कवि जीवन के विकास का प्रमुख प्रमाण माना जा सकता है ।

गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित विवेक विलास तथा ह०प्र०सं० १७० में लिखे विवेक विलास के छंदों तथा उनके क्रम की तुलना करने से ज्ञात होता है कि गोविन्द ग्रंथमाला के विवेक विलास की छंद संख्या २६३ तक तथा ह०प्र०सं०१७० के विवेक विलास की छंद संख्या ३५१ तक के छंद तथा उनके विषय समानान्तर चलते हैं, ह० प्र० में कुछ नये छंदों का प्रवेश अवश्य हुआ है, परन्तु उससे विषय क्रम में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता परन्तु उक्त संख्याओं के पश्चात् क्रम बिलकुल बदल जाता है । गोविन्द ग्रंथमाला के विवेक विलास के चौरासी लक्ष जीव योनी, अठारह पुराण, चार बानी, चारवेद आदि विषयक छंद[२] ह० प्र० १७० में नहीं मिलते, परन्तु छंद संख्या ३५१ के बाद अधिकांश छंद ऐसे हैं जो प्रबोध पच्चीसी, अन्योक्ति अरविन्द, शृंगार सरोजिनी आदि में भी मिल जाते हैं । इन छंदों के विषय में यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ये छंद विवेक विलास से अन्य रचनाओं में उद्धृत किये गये हैं या अन्य रचनाओं से विवेक विलास में । परन्तु विवेक विलास के विकास क्रम को देखते हुए, लगता यही है कि सं० १६५१ के पश्चात अन्य ग्रंथों की रचना करते समय (प्रबोध पच्चीसी के अतिरिक्त अन्य सभी रचनाएं, जिनमें ये छंद मिलते हैं सं० १६५१ के पश्चात की रचना हैं) नीति या विवेक विषयक जो भी छंद रचे गये, वे लक्षण के उदाहरण होने के कारण उन ग्रंथों में लिए गए तथा विषय के आग्रह से विवेक विलास में भी समाविष्ट कर लिए गए । वस्तु स्थिति जो भी हो, परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त रचनाओं में यही एक ऐसी रचना है, जो समय के साथ साथ विकसित होती गयी है तथा जिसके लगभग १२५ छंद अन्य रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं , अस्तु।

१- गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग उपोद्घात, पृ० १३ ।

२- वही, पृ० १३७ से १४१ तक ।

विवेक विलास से सम्बन्धित समस्त सामग्री का अध्ययन करने के पश्चात यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ह०प्र०सं० १७० सुसंपादित न होने के कारण अपूर्ण परन्तु अन्तिम प्रति मानी जा सकती है । गोविन्द गिल्ला भाई, अपनी अन्य रचनाओं के समान, इसका भी संपादन करना चाहते थे, जैसा कि ह०प्र०सं० १७० में स्थान स्थान पर छंदों के क्रम परिवर्तन के निर्देशों से स्पष्ट हो जाता है, परन्तु किन्हीं कारणों से वे इसका संपादन नहीं कर सके । अत: जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि ह०प्र०सं० १७० को इस रचना की निर्विवाद रूप से पूर्ण प्रति नहीं कहा जा सकता, फिर भी इस प्रति के उपलब्ध प्रतियों में अंतिम होने तथा अपेक्षाकृत अधिक पूर्ण होने के कारण, इसी प्रति को अध्ययन की आधारभूत प्रति माना जा सकता है। गोविन्द गिल्ला भाई ने इस प्रति के विषय में कहा है कि "आ पुस्तक मां सं० १६७६ ना आसो मास थी महारी करेली कविताओ लखेली तथा छापेली ऊपर थी सुधारी ने बीजी वार लखी छे । माटे हवे पछी तेते शुद्ध मानवी, ने ते पर विश्वास राखवो"[१] । (इस प्रति में सं० १६७६ के आश्विन मास तक की अपनी कविताएँ लिखी हुई और छपी हुइयों को सुधार कर फिर से लिखा है, अत: उन्हें शुद्ध मानना तथा विश्वास करना ।) अत: इस प्रति की ही अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जाता है ।

२।३।२ वर्ण्य विषय

ह०प्र० १७० में पृ० २६ से १२२ तक नीति विषयक ४७७ छंद हैं, जिनमें से प्रथम १६ छंद विभिन्न देवी देवताओं की वन्दना के हैं तथा दो दोहों में विवेक विलास ग्रंथ का प्रयोजन कवि ने बताया है । तत्पश्चात् छंदों में विवेक तथा विद्या की प्रशंसा कर कवि ने काव्य, कवि, पंडित, सुभाषित, व्याकरनी आदि की स्तुति निन्दा परक ८१ छंद लिखे हैं । इसके बाद एक एक दो दो छंदों में सुमित्र

१- ह०प्र०सं० १७० मुल पृष्ठ ।

कुमित्र स्वार्थी, परमार्थी यश, धर्म भाग्य आदि के विषय में लिख पुन: स्तुति निन्दा परक छंद लिखे हैं , जिनके विषय विधि, व्याकरनी, संस्कृत भाषा, हिन्दी भाषा आदि हैं । तदुपरान्त धैर्य, स्वभाव, संप, चतुराई आदि के विषय में एक एक दो दो छंद दे ५० छंद स्त्री प्रशंसा तथा निन्दा के विषय में लिखे हैं तथा अनेक छंद अन्तरलापिका, वहिरलापिका, गूढ़ार्थ प्रहेलिका , वाक्य छल, दृष्टि कूट, चित्र काव्य तथा अन्योक्ति के दिए गए हैं/अन्त में कवि ने ५ छन्दों में कवि वचन दे ग्रंथ समाप्ति की सूचकपुष्पिका लिखी है/ परन्तु ग्रंथ यहां पूर्ण नहीं होता, उसका वढारा (विस्तार) आगे लिखा गया है, जिसमें एकावली, अन्योक्ति आदि के कुछ छंदों में नायक नायिका भेद तथा वृद्धावस्था आदि के विषय में लिखा गया है ।

२।३।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या	योग
१- दोहा	२२	
२- कुंडलिया	१४	
३- छप्पय	१४	
४- सवैया	१०२	
५- कवित्त	३२५	
----	----	
५	४७७	
----	----	

२।३।४ रचना काल

२।३।१ के विवेचन से स्पष्ट है कि इस रचना का कोई एक रचना काल नहीं कहा जा सकता । यह रचना सं० १६२० से १६८० तक के सम्पूर्ण काल में विकसित होती गयी है ।

२।४ लच्छन बत्तीसी

२।४।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल दो रूपों में उपलब्ध है : १- उद्धरण रूप में, २- प्रकाशित रूप में। ह०प्र०सं० १६४ में पृ० १६ से १७ तक चार छंद क्रमश: छंद संख्या १,२,३,४ प्राप्त होते हैं जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या ३, ४, १०, ११ के रूप में मिल जाते हैं तथा ह०प्र०सं०१८८ में पृ० ३ से ५ तक १५ छंद मिलते हैं जिनकी क्रम संख्या कवि ने इस प्रकार दी है : २१, १, २, ३, ६, ७, ८, ६, १०, १४, १२, १३, १५, ३० , ३१ ये छंद प्रकाशित प्रति में क्रमश: १६, ५, ६, १७, २०, २१, २२, २३, २४, ११, ६, १०, १२, २५, २६ संख्या के छंदों के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इस रचना के उक्त छंदों की प्रकाशित प्रति के छंदों के साथ तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि उनमें कोई विशेष अन्तर नहीं है। प्रकाशित प्रति के छंद सं० ६ तथा २५ और ह०प्र०सं० १८८ के छंद संख्या १२ और ३० में कुछ विशेष अन्तर है जो यहां दिया जा रहा है :

(१) भोजन भूरि कमी जिहि पावत
ताहि ते तोष धरे हरखाई - प्रकाशित प्रति छं० सं० ६
न्याद अती कम जेहि मिले
तिन में तन तोष धरे हरखाई - ह०प्र०सं०१८८ छं० सं०१२

(२) कोऊ समें अकुलाय न काम ते
बुद्धि विशारद शोहे सदाई   प्र० प्र० छं० सं० २५

बुद्धि विशाल बसे मन में
अटके नहि काम करे सब धाई   ह० प्र० सं० १८८ छं० सं०३०

उक्त हस्तलिखित प्रतियों का रचना काल अज्ञात है, जबकि प्रकाशित प्रतिका प्रकाशन काल सं० १६६७ है। इन प्रतियों की तुलना के आधार पर, अत: यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गोविन्दगिल्ला भाई ने सं० १६६७ के पश्चात इस रचना

के क्रम आदि में संशोधन अवश्य किया था । क्योंकि उक्त प्रतियों में गोविन्द गिल्ला भाई की उन रचनाओं के छंद भी उद्धृत मिलते हैं, जिनकी रचना गोविन्द ग्रंथमाला के प्रकाशन के पश्चात हुई थी । इसलिए यह अनुमान तर्क संगत ही है कि अन्य रचनाओं के समान इस रचना में भी कवि ने कुछ संशोधन किये होंगे । परन्तु ऐसी किसी संशोधित प्रति के अभाव में तथा उपलब्ध प्रतियों के अपूर्ण होने के कारण गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित प्रति को ही इस रचना के अध्ययन के आधार के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है । वैसे यह रचना गोविन्द ग्रंथ माला में प्रकाशित होने के पूर्व सं० १६२७ में भावनगर से गोविन्द काव्य अंक २ के रूप में प्रकाशित हो चुकी थी,[१] परन्तु वह प्रति भी आज अप्राप्य है । अत: उसके विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता है ।

२।४।२ वर्ण्य विषय

गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग के पृ० १४२ से १४७ तक ३५ छंदों में यह रचना प्राप्त होती है , जिसके प्रथम दो छंदों में श्रीपति चरणों की वंदना कर ग्रंथ की प्रस्तावना की गई है । फिर एक एक छंद में सिंह और बक के लक्षण, मुर्गा के चार लक्षण, कौवा के पांच लक्षण , श्वान के छह लक्षण , गंदर्भ के तीन लक्षण, मयूर के सात लक्षण और राजा के लक्षणों का उल्लेख कर आगे नौ छंदों में उनके उदाहरण दिये गये हैं । इसके बाद दो छंदों प्रस्तुत ग्रंथ के नाम की सार्थकता बता कर कवि ने अन्य मतानुसार बत्तीस लक्षणों का नाम कथन किया गया है । तत्पश्चात एक छंद में सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शरीर के बत्तीस लक्षणों का वर्णन किया है तथा अन्त के नौ छंदों में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचनाकाल आदि दिया है ।

२।४।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- दोहा	२५
२- छप्पय	३

१- स्मरण पोथी, पृ० ७ ।

३- कवित्त	३
४- सवैया	४
४	३५

२।४।४ रचनाकाल

इस रचना का रचना काल कवि ने इस प्रकार दिया :

संवत षट दग अंक शशि, माघ शुक्ल शर दिन
गोविंद गुंथी गुंथ यह पूरन प्रीते कीन ।

अर्थात् संवत् १९२६ के माघ शुक्ला पंचमी के दिन यह गुंथ पूरा किया गया ।

२।५ शिखनखचंद्रिका

२।५।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- उद्धरण रूप में , २-प्रकाशित प्रति के रूप में । ह०प्र०सं० १६४ में पृ० ७ से ६ तक शिखनख चंद्रिका की कविता नाम से १० छंद प्राप्त होते हैं, जिनमें से केवल चार छंद क्रमश: छंद संख्या ५, ८, ६, १० प्रकाशित प्रति में क्रमश: १०, ५६, ६६, ७३ संख्या के छंदों के रूप में प्राप्त होते हैं, शेष छंद १, २, ३, ४ और ६, ७ क्रमश: प्रकाशित छवि सरोजिनी में छंद संख्या ४, ६, ७, ७ तथा प्रकाशित नैन मंजरी में छंद संख्या ५५, ६२ के रूप में उपलब्ध होते हैं । ह० प्र० सं० १८६ में ३२ छंद इस रचना के उद्धृत रूप में मिलते हैं, जिनमें से क्रमश: छंद संख्या ५, ६, ७, ८, १०, २३, ३२, ७६, ६२, ६३, ६४, १३८, १८६, १६३, २२३, २२४, २२४ प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या ५, ६, ७, ८, १०, २०, २२, ४६, ६२, ६३, ६६, ६०, १२२, १२६, १४५, १४६, १४४ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं

तथा शेष छंद राधा रूप मंजरी, शृंगार षोडशी, नैन मंजरी और छवि सरोजिनी नामक रचनाओं की प्रकाशित प्रतियों में प्राप्त होते हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

ह०प्र०सं० १८६ की छंद संख्या	राधा रूप मंजरी की छंद संख्या
२१, ३६, ७४, ६१, १३७, १५३	७६, ४८, ४२, २७, २१
,, ,,	शृंगार षोडशी की छंद संख्या
२७ ५७	२६ , ३१
,, ,,	नैन मंजरी की छंद संख्या
३३, ३४, ३७	५५, ५४, ८५
,,	छवि सरोजिनी की छंद संख्या
२१६, २२०, २२१, २२२	४, ६, ७, ७

गोविन्द ग्रंथमाला पृ० १४८ से १६६ तक १५४ छंदों में प्रस्तुत रचना प्रकाशित रूप में प्राप्त होती है। शिखनख चंद्रिका की उक्त हस्तलिखित प्रतियों तथा प्रकाशित प्रतियों में प्राप्त छंदों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि ह०प्र०सं० १८६ के कुछ छंदों में सामान्य पाठान्तर हैं तथा एक दो में कुछ विशेष पाठान्तर हैं, जो यहां उदाहरणार्थ दिये जा रहे हैं :

(१) कोऊ कहे रसराज शूरमा चलन जू के — ह०प्र०सं०१८६ छं० सं०३६
कोऊ कहे रसराज सूर बीर बलन के — प्र०प्र० राधारूप मंजरी छं०सं०६४
कोऊ कहे अभिराम लोचन तड़ाग तीर — ह०प्र०सं०१८६ छं०सं० ३६
कोऊ कहे भाय भले लोचन तड़ाग तीर — प्र० प्र० राधा रूप मंजरी छं०सं०६४

(२) पायल न पाय कटि किंकिनी न राजत है
भुज में न भुज बंद विमल विराजे है
कंठ में कंठ शिरी शीश फूल शिर नाहि
भाल में तिलक एक भांति भली भाजे है — ह०प्र०सं०१८६ छं०सं०२७

नायका नवल एक सुलमा समूह चारु

बिन आभरन अति विमल विराजे हैं

साजि कै सुभग चीर केसर को किये वाने

भाल पै तिलक सोइ भूरि विधि भाजे हैं   प्र०प्र०शृंगार सरोजिनी
छं०सं० २६

उपरोक्त हस्तलिखित प्रतियाँ तथा प्रकाशित प्रति की तुलना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत रचना में प्रकाशित प्रति के पश्चात काफी परिवर्तन कवि ने किया है । हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त पाठान्तर, जैसे इस रचना में कवि द्वारा किये गये संशोधनों की ओर इंगित करते हैं, उसी प्रकार छंदों की संख्या तथा क्रम में अन्तर यह सिद्ध करता है कि न केवल कवि ने इस रचना का पुनर्सम्पादन ही किया है, वरन् इसमें अनेक नवीन छंदों का समावेश भी किया है । ह०प्र०सं०१८६ में अन्तिम छंद की संख्या २२४ दी गयी है, जबकि प्रकाशित प्रति में केवल १५४ छंद ही हैं । इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि ह०प्र०सं०१८६ के लेखन काल तक इस रचना की छंद संख्या २२४ तक तो पहुंच ही गयी थी, इससे आगे भी छंद संख्या गयी हो तो कुछ निश्चित रूप से उसके विषय में नहीं कहा जा सकता ।

यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने अपनी अन्य रचनाओं के साथ जहाँ भी इस रचना का उल्लेख किया है वहाँ इसकी छंद संख्या १५४ ही दी है[१] तथा एक स्थान पर इस रचना तथा अन्य रचनाओं में समान रूप से मिलने वाले छंदों के विषय में लिखा है कि शिखनख चंद्रिका, राधा रूप मंजरी, भूषण मंजरी, राधा मुखषोडशी, पयोधर पच्चीसी, और नैन मंजरी यह छ: ग्रंथों में परस्पर एक दूसरे ग्रंथों की कविता कोई कोई स्थल में खास प्रसंगवश रखी गयी है वह कायम रखने की है[२] । आशय यह कि शिखनख चंद्रिका की मूल छंद संख्या १५४ ही होगी, परन्तु

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६५ ।

२- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० १६ ।

आगे चल कर इसमें अन्य रचनाओं के कुछ विशेष छंद समाविष्ट कर लिए होंगे, इसलिए इस रचना की अंतिम प्रति में, जिसमें से ह०प्र०सं०१८६ में कवि ने इस रचना के छंद उद्धृत किये हैं, इस रचना की छंद संख्या २२४ या उससे कुछ अधिक हो गयी होगी । परन्तु इस रचना की कोई अन्य पूर्ण हस्तलिखित प्रति प्राप्त नहीं होती। अत: इस रचना के अन्तिम रूप के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता । अत: गोविन्द ग्रंथ माला में प्रकाशित प्रति को ही इस रचना के अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है ।

२।५।२ वर्ण्य विषय

प्रथम चार छंदों में कवि ने मंगलाचरण कर ग्रंथ की प्रस्तावना प्रस्तुत की है तथा आगे चार छंदों में उपमा के विषय में विचार किया है । इसके पश्चात शिख से नख इस क्रम में नायिका के रूप का वर्णन किया है, नायिका के अंग आदि के वर्णन का क्रम इस प्रकार है : छूटे केश, पाटी, मांग, शीश फूल, बेनी, बेनी भूषण, लट, जूरौ, भाल, भ्रकुट नैन, पलक, बरुनी, तारे, लाल डोरे, अंजन, चितवनि, कटाक्ष, कान, कपोल, कपोल गाड, कपोल तिल, नासिका, बेसर, अधर, दन्त, चाँप, रसना, वचन, हास्य, मुख गंध, चिबुक, चिबुक तिल, मुख मंडल, मुख कान्ति, शीतला के दाग, ग्रीवा, ग्रीवा-रेख, ग्रीवा भूषण, उर्वशी, पीठ, बेनी सहित पीठ, सांग भुज, भुजा, भूषण, बाहु, कर, कलाई, चूरी, करतल, मेंहदी, करांगुलि, नख, कुच, कुचाग्र, कुचान्त, कंचुकी, उदर, रोमावली, त्रिवली, नाभि, कटि, घाघरौ, नितम्ब, जघन, उरु, पीडुरी, मुरवा, गुलफ, एडी, प्रपद, प्रपद भूषण, पदांगुलि, नख, पग तल, यावक, पग कान्ति, पग सुकुमारता, गति, सर्वांग भूषण, अंग प्रभा, अंग सुवास, अंग सुकुमारता, श्याम साडी, घूंघट तथा छवि[1] । इसके बाद अंत में तीन छंदों में नायिका महिमा का वर्णन कर आठ दोहों में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूर्ण किया है ।

१- गोविन्द ग्रंथमाला [illegible] शिखनख चंद्रिका, छं०सं०६ से १४३ ।

२।५।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ छप्पय	१
२ सवैया	१४
३ दोहा	१७
४ कवित्त	११२
४	१५४

२।५।४ रचनाकाल

ग्रंथ के अंत में गोविन्द गिल्लाभाई ने इसका रचना काल इस प्रकार दिया है :

संवत विक्रम के विमल छिति पुग ग्रह शशि साल।
मार्ग मास में पूर्ण भी गोविद ग्रंथ रसाल।।[1]

अर्थात् विक्रम संवत् १९४१ के अगहन मास में यह रचना पूर्ण हुई।[2]

२।६ राधा रूप मंजरी

२।६।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

शिखनख चंद्रिका के समान राधा रूप मंजरी भी दो रूपों में प्राप्त होती है - १- उद्धरण रूप में, २- प्रकाशित प्रति के रूप में। ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के ६ छंद मिलते हैं, जिनमें से १, २, ४, ५, ६ क्रमश: प्रकाशित प्रति में ६४, ६७, ६०,

---

१- गोविन्द ग्रंथमाला , पृ० १६६।

२- तुलनीय हैं : स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६५, प्रशस्ति० पृ० १४।

८६, और ६७ के रूप में मिल जाते हैं, जबकि तीसरा छंद शिखनख चंद्रिका की प्रकाशित प्रति में छंद संख्या ४३ के रूप में प्राप्त हो जाता है । इन छंदों में कोई विशेष पाठ भेद नहीं मिलता । ह० पृ० सं० १६० पृ० ३० से ३५ तक राधा रूप मंजरी ग्रंथ की कविता शीर्षक के नीचे ३२ छंद मिलते हैं , जिनमें से केवल प्रथम तीन छंद संख्या ५, ६, ७ प्रकाशित प्रति में छंद संख्या २, ४, ३ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं । शेष २६ छंद छवि सरोजिनी की प्रकाशित प्रति में प्राप्त होते हैं । इन छंदों के विषय में यहां यह ज्ञातव्य है कि इनमें क्रम भेद के अतिरिक्त किसी प्रकार का पाठ भेद नहीं मिलता । साथ ही किसी अन्य पूर्ण एवं परवर्ती हस्तलिखित प्रति के अभाव में प्रकाशित प्रति को ही अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत रखना पड़ता है । परन्तु उपरोक्त हस्तलिखित प्रतियों तथा प्रकाशित प्रति की तुलना के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने इस रचना में कुछ हेर फेर कर इसे नये सिरे से संपादित किया होगा । परन्तु आज वह प्रति उपलब्ध नहीं है, अत: प्रकाशित प्रति को ही अध्ययन की आधारभुत प्रति के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

२।६।२ वर्ण्य विषय

गोविन्द ग्रंथमाला के पृ० २०० से २३४ तक प्रस्तुत रचना १०२ छंदों में प्राप्त होती है जिसके प्रथम चार छंदों में राधा की वंदना कर कवि ने चार छंदों में प्रस्तुत ग्रंथ की प्रस्तावना प्रस्तुत की है। तत्पश्चात राधा का नख शिख वर्णन निम्नलिखित वर्णानुक्रम में किया है : चरन, चरन सुकुमारता, चरण तल, जावक, पदांगुलि, एड़ी, गुल्फ, मुरवा, पीडुरी , उर, नितम्ब, कटि, घांघरी, नाभि, त्रिवलि, रोमाजलि, उदर, कुच, करांगुलि, करतल, कर तल रेखा, मेंहदी, कलाई, कलाई भुषण, कर , भुज, पीठ, ग्रीवा, ग्रीवा भुषण , उर्वशी धुकधुकी, मुख मंडल, मुख कान्ति, चिबुक, अधर, श्वेत दंत, लाल दंत, श्याम दंत, रसना, बानी, वचन, हास्य, मुख सुगंध, नाशिका, कपोल, कपोल तिल, कान, नैन, पलक, बरुनी, तारे, लाल डोरे, अंजन, चितवनि, कटाक्ष, भ्रकुटी, भाल, टीका, केश पाश, पाटी, मांग, बेनी, लट, जूरा। इसके बाद कवि ने सर्वांग तथा सर्वांग भुषणों का वर्णन कर अंग प्रभा, अंग सुकुमारता

अंग सुवास, साडी, घुघट तथा छवि का वर्णन किया है। एवं अंत में पाँच छंदों में कवि वचन के साथ ग्रंथ की समाप्ति की है।

२।६।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- छप्पय	१
२- सवैया	६
३- दोहा	९
४- कवित्त	८६
४	१०२

२।६।४ रचनाकाल

प्रस्तुत रचना का रचना काल गोविन्द गिल्ला भाई ने अपनी इस रचनाके अंत में इस प्रकार दिया है :

> संवत विक्रम के विमल दृग युग ग्रह छिति साल
> सावन में पूरन कियो गुंथी ग्रंथ रसाल[1]

अर्थात् संवत् १९४२ के सावन मास में यह ग्रंथ पूरा[2] किया गया। अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर यही रचना काल दिया गया है।

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० २३४।
२- स्मरण पोथी, पृ० ६२, ६५, प्रशस्ति, पृ० १४।

२।७ भूषण मंजरी

२।७।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है : १- उद्धृत रूप में २- प्रकाशित प्रति के रूप में । ह० प्र० सं० १६४ में इस रचना के ६ छंद क्रमश: छंद संख्या १, २, ३, ४, ५, ६ प्राप्त होते हैं, जो प्रकाशित प्रति में छंद संख्या ५, ६, ७, १५, ६२, ७१ के रूप में मिल जाते हैं । केवल अन्तिम दो छंदों में पाठान्तर है,जो नीचे दिया जा रहा है :

कमनीय कंचन की सुघट सुखद महा । प्र०प्र०छं०सं० ६२।१
सुन्दर सुवर्ण केरी विमल विशाल वर । ह०प्र०छं०सं० ५।१
वाहि में विमल लसैं आखर अनुप ताकी । प्र०प्र०छं०सं० ६२।२
अच्छर अनूप तासें कौंधत कमन ताकी । ह०प्र०छं०सं० ५।२
सुन्दर सुनारे गढे कंचन के भारे महा ,
सुघर सुढारे लसैं पायन लटकि कैं । प्र०प्र०छं०सं० ७१।१
सुन्दर सुढारे गढे कंचन के भारे महा ,
सुघर सोनारे लसैं पायन लटकि कैं । ह०प्र०छं०सं० ६।१

ह०प्र०सं०१८७ में इस रचना के १२ छंद क्रमश: छंद संख्या ४, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५ प्राप्त होते हैं जिनमें से छंद संख्या १० वाला छंद छोड़ कर शेष सभी छंद प्रकाशित प्रति में छंद संख्या ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं । ह०प्र० का १०वां दोहा भूषण लक्षण का है, जो प्रकाशित प्रति में नहीं मिलता । प्र० प्र० में भूषण लक्षण का दोहा इस प्रकार मिलता है:

भूषत सो भूषण भले शोभावत सब अंग ।
उनको भूषण कहत हैं उर में धारि उमंग[१]

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० २३५ छं० सं० ३ ।

जबकि ह० प्र० में भूषण का लक्षण इस प्रकार दिया गया है :

जाके धारन तें अधिक शोभा तन सरसाय ।
गोविंद ताकों कहत हैं भूषण सब कविराय ।[१]

इन दोहों की तुलना से स्पष्ट हो जाता है कि इन दोहों के मूल विचार में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है । परन्तु कथन शैली का ही अन्तर है । अत: अनुमान किया जा सकता है कि इस रचना के प्रकाशन के पश्चात कवि ने इस रचना में कुछ परिवर्तन आदि करते समय उक्त दोहे को निकाल कर उसके स्थान पर नवीन दोहा लिख दिया होगा । परन्तु किसी परवर्ती पूर्ण प्रति के अभाव में किसी संभावित परिवर्तन के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता । साथ ही प्रकाशित प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत करना पड़ता है । इस रचना के कुछ छंद शिखनख चंद्रिका, छवि सरोजिनी आदि रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं ।

अपने द्वितीय रूप में यह रचना गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग के पृ० २३५ से २६७ तक ११७ छंदों में प्राप्त होती है ।

२।७।२ वर्ण्य विषय

इस रचना में सर्वप्रथम मंगलाचरण के पश्चात् भूषण का लक्षण दे बारह भूषणों के स्थानों को बताया गया है तथा एक बारह भूषणों का एकत्र उदाहरण दिया गया है, जिसके पश्चात शिर भूषण, मांग भूषण, भाल भूषण, कर्ण भूषण, नाशिका भूषण, कंठ भूषण, भुज भूषण, कर भूषण, करांगुलि भूषण, कटि भूषण, पद भूषण, पदांगलि भूषण के लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं । तत्पश्चात अन्य मतानुसार पुन: बारह भूषणों का लक्षण दिया गया है तथा शृंगार और भूषण का अन्तर बताया गया है । तथा स्नान करना, तेल लगाना, बाल काढ़ना, मांग भरना, खौर लगाना, बेंदी लगाना, अंजन लगाना, ताम्बूल सेवन करना,

---

१- ह० प्र० सं० १८७, पृ० २२, छं० सं० १० ।

अंग राग लाना, अंग में सुगंध बसाना, मेंहदी रचाना, पद जावक लाना । इस प्रकार बारह भूषणों का कथन कर उनके लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं । अंतमें कवि वचन के पांच छन्दों में ग्रंथ प्रयोजन, आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ समाप्त किया है ।

२।७।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- पादाकुलक	४
२- सवैया	६
३- दोहा	४७
४- कवित्त	६०
४	११७

२।७।४ रचनाकाल

इस रचना के अंत में कवि ने इसका रचनाकाल इस प्रकार दिया है :

संवत विक्रम के सुभग प्राण वेद ग्रह चंद ।[१]
वामें पूरन प्रेम तें किये ग्रंथ सुखकंद ।।

अर्थात् संवत् १६४५ में यह रचना पूरी की गयी ।

२।८ शृंगार षोडशी

२।८।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- उद्धृत रूप में, २- प्रकाशित रूप में । ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के ६ छंद प्राप्त होते हैं, जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या ३, ४, ५, १३, १८ और २६ के रूप में मिल जाते हैं । ह०प्र० के पांचवें छंद में कुछ पाठान्तर है जो नीचे दिया जा रहा है :

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० २६७ छं०सं० ११७ ।

निर्मल गुलाब नीर शीर ढरकाई के।
गोविद कहत ताकी शोभा सुखदाय लखि,
मेनका रंभा सी रही लालन लजाइ के। ह० प्र० सं० १६४ छं०सं० ५
गहिरे गुलाब नीर शीर ढरकाइ के।
उपमा गुविन्द वाकी आइ मोहि ऊर मनो,
गगन ते गंग परे शंकर पे आइ के। प्र०प्र० पृ०२७१ छं०सं० १८

ह० प्र० १८६ में इस रचना के १५ छंद प्राप्त होते हैं, जिनमें से १४ छंद क्रमशः छंद संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, १२, १६, १७, १८, २६ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। ह० प्र० का तेरहवां छंद प्र० प्र० में नितान्त भिन्न रूप से मिलता है अतः दोनों छंद यहां दिये जा रहे हैं :

तिलकादिक भूषण जिते धारत भाल पे बाल।
गोविद वाकों कहत हैं भूषण भाल रसाल॥ ह०प्र० १८६ पृ० २१ छं० १३

केसर कंचन आदि के तिलक आदि बनवाय।
धारत भामा भाल सों भूषण भाल कहाय॥ प्र०प्र० पृ० २७२ छं० २५

इसी प्रकार ह०प्र० के छंद संख्या ८ और प्रकाशित प्रति के छंद संख्या १२ में भी विशेष पाठान्तर है, साथ ही हस्तलिखित प्रति में दो स्थानों पर संशोधन भी किया गया है, अतः दोनों छंदों को नीचे दिया जा रहा है :

प्रथम नहाई (आदी अनहाई) अंगराज को लगाइ अंग,
बार को बनाइ शीश शीश फूल (शीर चूड़ामणि) साजे हैं।
भाल में तिलक नैन अंजन तरौंन कान,
नथ्थ नाक पान मुख कंठ हार भाजे हैं।
कंचुकी उरोज पान कंकना कमर कांचि,
पाय में नूपुर चीर पाट कों विराजे हैं।
गोविद सुकवि ऐसे चातुरी समेव अंग,
सोरह सिंगार सीय सुंदरी ने छाजे हैं॥ ह०प्र०सं०१८६ छं० ८

आदि अवगाहन औं अंगराग अंगन में
बार कौ बनाइवौ रु शीश फुल धारिवौ
भाल में तिलक नैन काजर औं कान भूषा
नाक में नथुनी मुखराग की सुधारवौ ।
कंठ कर भूषण औं अंगिया उरोज पर
किंकिनी कमर पाय भुषन की डारिवौ ।
गोविद कहत और चीर चतुराई मिलि
सोरह सिंगार सोइ बाल के उचारिवौ   प्र०प्र० पृ० २६६ छं० १२

अपने द्वितीय रूप में यह रचना गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग के पृ० २६८ से २८५ तक ६६ छंदों में प्रकाशित मिलती है ।

उक्त दोनों रूपों की तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस रचना के प्रकाशित हो जाने के पश्चात कवि ने इस रचना में बाद में भी अनेक प्रकार के संशोधन तथा छंदों के क्रम में भी कुछ परिवर्तन किया है, परन्तु किसी परवर्ती पूर्ण प्रति के अभाव में उस विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता तथा प्रकाशित प्रति को ही अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है ।

भूषण मंजरी के समान ही इस रचना के भी अनेक छंद शिख नख चंद्रिका आदि रचनाओं में प्राप्त होते हैं ।

२।८।२ वर्ण्य विषय

राधा कृष्ण के चरणों की वंदना कर कवि ने सर्वप्रथम नायका के सोलह शृंगारों के वर्णन का प्रस्ताव किया है तथा शृंगार और शृंगार के तीन भेदों आलंकारिक, आंगिक तथा स्वाभाविक का वर्णन कर आलंकारिक सोलह शृंगारों का नाम कथन इस प्रकार किया है :

मज्जन अंगजा केश बनावन चारु शिरोमनि बैंदि बिराजे ।
अंजन और तरौन रु बेसर ताम्बुल हार हिया पर भाजे ।

कंचुकि कंकन मेखला मंजिर चीर सुहावन चातुरी छाजे ।
गोविद सोह सिंगारहि सोरह चाह धरी तनु सुन्दरी साजे[1]

इसके पश्चात कवि ने आलंकारिक शृंगार का लक्षण दे उसके सोलह भेदों के पृथक् पृथक् लक्षण उदाहरण दिये हैं । तत्पश्चात आंगिक तथा स्वाभाविक शृंगारों के लक्षण दे, उनके एक एक एकत्र उदाहरण दिये गये हैं । अंत में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूर्ण किया है ।

२।८।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ सवैया	२
२ पादाकुलक	५
३ कवित्त	२८
४ दोहा	३४
४	६९

२।८।४ रचनाकाल

इस रचना का रचनाकाल गोविन्द गिल्ला भाई ने संवत् १९४५ दिया है ।[2]

२।९ राधा मुख षोडशी

२।९।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- उद्धृत रूप में, २- प्रकाशित रूप में । ह०प्र०१९४ में इस रचना के ४ छंद मिलते हैं, जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या ४, ७, १३, १५ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं । ह०प्र०सं०१८६ में इस रचना का एक

१- गोविन्द ग्रंथमाला , पृ० २६९ छं० १३ ।

२- वही, पृ० २८५, छं० ६९ ।

छंद है जो प्रकाशित प्रति में प्रथम छंद के रूप में प्राप्त हो जाता है । इन छंदों में किसी प्रकार का पाठ या क्रम भेद नहीं मिलता । अत: अनुमान किया जा सकता है कि इस रचना के प्रकाशन के पश्चात् कवि ने इसमें किसी प्रकार का संशोधन आदि नहीं किया था । गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० २८६ से २६२ तक १७ छंदों में प्रस्तुत रचना प्राप्त होती है । हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बलभद्र कृत शिखनख ग्रंथ के प्रकाशन के साथ इस ग्रंथ के प्रकाशित होने का कवि ने एक स्थान पर उल्लेख किया है[1] परन्तु वह ग्रंथ लेखक को देखने को नहीं मिला । ऐसी स्थिति में गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित इस रचना की प्रति के आधार पर इसका परिचय प्राप्त किया जा सकता है ।

२।६।२ वर्ण्य विषय

राधा मुख चन्द की वन्दना, सराहना कर कवि ने यह ग्रंथ प्रारम्भ किया है, तथा आगे १५ छंदों में राधा के मुख का वर्णन विविध अलंकारों में किया है। अंत में एक छंद में ग्रंथ प्रयोजन, आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे, ग्रंथ समाप्त किया है ।

२।६।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	१७

२।६।४ रचनाकाल

इस ग्रंथ का रचना काल गोविन्द गिल्ला भाई ने इस प्रकार दिया है :

संवत उनीस और पचास वर्ष मांहि मंजु,
राधा गुन गाइबे कों भाव भयो गात है ।
गोविद कहत तब राधा मुख षोडशी ये,
मोद ते बनाइ मैं ने आछो अवदात है[2] ।

१- स्मरण पोथी, पृ० ३३ ।

२- गोविन्द ग्रंथमाला पृ० २६२, छं० १७ ।

अर्थात् संवत् १६५० में उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की । इस प्रकार के उल्लेख अन्यत्र भी मिलते हैं, जिनमें सर्वत्र पूर्ण साम्य है[1] ।

२।१० पयोधर पच्चीसी

२।१०।१ अध्ययन की आधार भुत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है : १- उद्धृत रूप में, २- प्रकाशित रूप में । ह० प्र०सं०१६४ में इस रचना के चार छंद उद्धृत किये गये हैं, जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या १७, १६, २२, २५ के रूप में उपलब्ध हो जाते हैं । ह० प्र० सं०१८१ में उद्धृत चार छंद प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या १३, १७, १६, २१ के रूप में मिल जाते हैं । इन प्रतियों तथा प्रकाशित प्रति के छंदों तथा उनके क्रम आदि में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है, साथ ही किसी अन्य परवर्ती पूर्ण प्रति के अभाव में प्रकाशित प्रति को ही इस रचना के अध्ययन की आधार भुत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जाता है, जो गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० २६३ से ३०४ तक २६ छंदों में आबद्ध मिलती है ।

२।१०।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत रचना के प्रथम आठ छन्दों मेंशिव की वन्दना की गयी है, इन सभी छंदों में श्लेषालंकार के प्रयोग के कारण इन्हें स्तन वन्दना के छंद भी कहा जा सकता है । आगे भी इसी प्रकार अनेक अलंकारों के छल से विविध प्रकार से स्तनों का वर्णन किया गया है । कवि ने स्वयं इस विषय में लिखा है कि "वामें नायका के स्तन की प्रशंसा में अनेक उपमा और श्लेषादिक अन्य अलंकारों सहित पचीश कवित्व अपूर्व चमत्कारिक रीति से वर्णन किये हैं[2] । इस रचना के छंद संख्या १, २, ८ की हिन्दी टीका भी दी गयी है । अन्त में एक छंद में ग्रन्थ प्रयोजन, आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है ।

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, प्रशस्ति , पृ० १४ ।

२- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० १५ ।

२।१०।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	२६

२।१०।४ रचनाकाल

इस रचना के अंत में कवि ने इसका रचनाकाल संवत १६५२ दिया है,[१] जो अन्यत्र प्राप्त उल्लेखों के साथ मेल खाता है।

२।११ नैन मंजरी

२।११।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में प्राप्त होती है - १- उद्धृत रूप में, २- प्रकाशित रूप में। ह०प्र० सं० १६४ में चार छंद हैं जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: ४७, ४८, ५३, ५४ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। ह०प्र०सं०१८१ में क्रमश: छंद संख्या ५, ४, १०, १३, २२, २८, ३७, ४३, ५६, ६७ के रूप में इस रचना के १० छंद प्राप्त होते हैं जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या ४८, ४७, ५३, ६५, २१, २८, ६, ३२, ६२, ६१ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। प्रकाशित प्रति के क्रमश: छंद संख्या ६, २१, २७, ३२, ६१, ६२ ६५ तथा ४८ के छंदों तथा हस्तलिखित प्रतियों के इन्हीं छंदों में सामान्य पाठान्तर हैं। साथ ही क्रम भेद भी है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रकाशित प्रति में कवि ने बाद में कुछ परिवर्तन अवश्य किया था। परन्तु किसी अन्य परवर्ती पूर्ण प्रति के अभाव में इस विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० ३०५ से ३४६ तक १०५ छंदों में यह रचना प्रकाशित रूप में प्राप्त होती है। अन्य किसी पूर्ण प्रति के अभाव में इसी प्रकाशित प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० ३०४ छं० २६।

२।११।२ वर्ण्य विषय

इस रचना में प्रथम तीन छंदों में नैन शालिग्राम, नैन शिव और नैन दशावतार रूपकों के द्वारा नैन वर्णन के साथ साथ मंगलाचरण किया है, एवं आगे ७३ छंदों में विभिन्न अलंकारों के मिस अनेक प्रकार से नैनों का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् कुछ छंदों मेंपलक, बरुनी, तारे, लाल डोरे, अंजन, चितवनि और कटाक्ष का वर्णन कर अन्तिम दो छंदों में ग्रंथ के रचना काल आदि का उल्लेख कर ग्रंथ पूर्ण किया गया है। इस रचना के विषय में कवि ने कहा है कि 'वामें नायका के नेत्र की प्रशंसा में उपमा, रूपक, संदेह, श्लेष, उत्प्रेक्षादिक अनेक अलंकारों सहित महा-चमत्कारिक १०५ कवित्त अपूर्व रीति से वर्णन किये गये हैं।'[१]

२।११।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ दोहा	२
२ सवैया	४
३ कवित्त	९९
३	१०५

२।११।४ रचनाकाल

ग्रंथ के अन्त में कवि ने इसका रचनाकाल माघ मास संवत् १९५३ दिया है,[२] जो अन्यत्र प्राप्त उल्लेखों से मिलता है।[३]

२।१२ छवि सरोजिनी

२।१२।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल प्रकाशित प्रति के रूप में ही उपलब्ध होती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ह०प्र०सं० १९४ और १८१ से १९३ तक वाली जिल्द में गोविन्द

१- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात्, पृ० १५ । २- वही, पृ० ३४५ छं० १०४ ।
३- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति, पृ० १४ ।

गिल्ला भाई की प्राय: समस्त काव्य कृतियों के कुछ छंद उद्धृत मिल जाते हैं। परन्तु इस रचना का केवल उल्लेख ह०प्र०सं०१६४ में मिलता है कोई छंद नहीं।[१] जैसाकि पहले कहा जा चुका है कि इस रचना में ऐसे अनेक छंद प्राप्त होते हैं, जो इस रचना से पूर्व लिखित शिखनख चंद्रिका, राधा, रूप मंजरी आदि रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग में प्रकाशित इस रचना की प्रति को ही अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जाता है।

गोविन्द ग्रंथमाला में पृ० ३४७ से ३७० तक ६० छंदों में प्रस्तुत रचना प्राप्त होती है। अंतिम छंद की संख्या ६८ दी गयी है,[२] क्योंकि छंद संख्या ७ पुनरुक्त है,[३] परन्तु गोविन्द ग्रंथमाला के उपोद्घात में इस रचना की छंद संख्या ६८ ही दी गयी है[४] तथा अन्य स्थानों पर इसकी छंद संख्या ७० दी गयी है[५]। इस प्रकार विरोध मूलक उल्लेखों का कारण क्या हो सकता है, निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

२।१२।२ वर्ण्य विषय

प्रथम तीन छंदों में श्रीपति चरणों की वंदना कर कवि ने ग्रंथ की प्रस्तावना प्रस्तुत की है। तत्पश्चात ६० छंदों में विविध अलंकारों के मिस नायका की छवि का वर्णन किया है तथा ६ छन्दों में नायका के गुणों का वर्णन किया है। बीच में २ छंदों में 'नायक की नायका प्रति पत्रिका' है तथा अंतिम छंद में आत्म परिचय, ग्रंथ प्रयोजन और रचना काल दिया गया है।

२।१२।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- छप्पय	२
२- दोहा	४
३- सवैया	७
४- कवित्त	५६
४	६६

१- ह० प्र० सं०१६४, पृ०३, १५, ३७। २- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ०३७०।
३- वही, पृ० ३४८, ३४६। ४- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ०१५।
५- स्मरण पोथी, पृ०६३, ६५, प्रशस्ति, पृ०१४।

२।१२।४ रचना काल

ग्रंथ के अन्त में इसका रचनाकाल संवत् १६५४ दिया गया है, जो अन्यत्र प्राप्त उल्लेखों के साथ मेल खाता है[१]।

२।१३ प्रेम पच्चीसी

२।१३।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- उद्धृत रूप में, २- प्रकाशित रूप में। ह०प्र०सं०१६४ में इस रचना के ५ छंद मिलते हैं, जो क्रमश: छंद संख्या, २२, २५, २६, २८, ६ के रूप में प्रकाशित प्रति में प्राप्त होते हैं, जिनमें से केवल दो छंदों में सामान्य पाठ भेद है। ह०प्र०सं०१८५ में इस रचना के चार छंद क्रमश: छंद संख्या १६, २४, २२ और २३ के रूप में मिलते हैं जो प्रकाशित प्रति में क्रमश: छंद संख्या २२, २७, २५ और २६ के रूप में मिलते हैं तथा जिनमें से तीन छंदों में सामान्य तथा एक में विशेष पाठ भेद है। विशेष पाठ भेद यहां उदाहरणार्थ दिया जा रहा है :

गोविन्द कहत ऐसे जेहि जाकों प्यारी लगै
तेहि ताकों गहत है पूर्ण प्रेम धारी है। प्र०प्र०पृ०३८१ छं०२७।

गोविंद सुकवि ऐसें विश्व में विलोकी देखी
जेहि जाकों प्यारी ताकों गहत निहारी है। ह०प्र०सं०१८५।२६

आशय यह कि उद्धृत छंदों के क्रम तथा पाठ के भेद के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस रचना के प्रकाशन के पश्चात् कवि ने इसमें कुछ संशोधन आदि अवश्य किया था। परंतु किसी परवर्ती पूर्ण प्रति के अभाव में प्रकाशित प्रति को ही अध्ययन की आधारभूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है। गोविंद ग्रंथमाला के पृ०३७३ से ३८३ तक ३२ छंदों में यह रचना प्रकाशित रूप में प्राप्त होती है। गोविन्द ग्रंथमाला के उपोद्घात में इस रचना की छंद संख्या २५ दी गयी है[२], जबकि

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ०३७० छं०६८।

२- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ०१५।

अन्यत्र सर्वत्र इसकी छंद संख्या ३२ ही दी गयी है[१]।

२।१३।२ वर्ण्य विषय

प्रथम तीन छंदों में कवि ने मंगलाचरण कर प्रेम का लक्षण दिया है, जिसके पश्चात् प्रेम के स्वरूप और स्वभाव के विषय में सात छंद दिये गये हैं। तत्पश्चात दस छंदों में गुप्त और प्रगट रूप में प्रेम की व्यापकता तथा आठ छंदों में प्रेम की गति का वर्णन किया गया है। अन्त में चार छंदों में प्रेम के महत्व का वर्णन कर, अंतिम छंद में आत्म परिचय, ग्रंथ प्रयोजन और रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।१३।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- दोहा	३
२- कवित्त	२६
२	३२

२।१३।४ रचनाकाल

इसका रचना काल संवत १६५४ दिया गया है[२]।

२।१४ प्रबोध पच्चीसी

२।१४।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना तीन रूपों में प्राप्त होती है - १- उद्धृत रूप, २- प्रकाशित रूप में, ३- हस्तलिखित प्रति के रूप में। ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के चार छंद क्रमश: छंद संख्या ६, ११, १०, ८ तथा ह०प्र०सं० १८८ में चार छंद क्रमश: छंद संख्या ८,६, १०,० प्राप्त होते हैं, जो ० संख्या वाले छंद को छोड़ कर शेष सभी छंद उक्त क्रम

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति, पृ० १४।

२- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० ३८३, छं० ३२ स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति पृ०१४।

संख्याओं के साथ प्रकाशित प्रति में प्राप्त हो जाते हैं । गोविन्द ग्रंथमाला प्रथमभाग के पृ० ३८५ से ४९९ तक २६ छंदों में, हिन्दी टीका सहित यह रचना प्राप्त होतीहै । ह०प्र०सं० १८० में पृ० ५५ से ६४ तक २६ छंदों में यह रचना मिलती है, जिसके साथ गुजराती टीका भी है तथा द्वितीय छंद की द्वितीय एवं तृतीय पंक्तियां नहीं लिखी । परन्तु उनकी टीका है । इस प्रति के अन्त में पुष्पिका में कवि ने इसका लेखन काल नहीं दिया है । परन्तु इसी जिल्द में इस रचना से पूर्व क्रमश: बोध बत्तीसी तथा प्रारब्ध पचासा ग्रंथ लिखे हुए हैं, जिनकी रचना तिथि क्रमश: संवत १९७२ और १९६६ है[१] । अत: इस प्रति का लेखन काल संवत् १९७२ के पश्चात माना जा सकता है । ह०प्र०सं० १६७ में पृ० ६ से २१ तक २६ छंदों में यह रचना प्राप्त होती है, जिसमें छंदों को क्रमश: नहीं लिखा गया । साथ ही छंद संख्या १६, २०, २१ पर पैंसिल से (X) कट्टस का चिह्न लगाया गया है । उक्त छंदों को निकाल देने पर इस प्रति की छंद संख्या भी २६ ही रह जाती है । इस प्रति में इस रचना से पहले वैराग्य के फुटकर कवित्त संग्रह नाम से ३० छंद लिखे हुए हैं, जिनमें[२] से एक छंद में गोविन्द गिल्ला भाई के पुत्र श्री देव जी की मृत्यु का उल्लेख मिलता है, जिसका समय सं० १९३७ अन्यत्र उल्लिखित है[३] । यही समय इस रचना का भी है[४] । अत: इस रचना की उक्त तीनों पूर्ण प्रतियों के लेखन काल के विषय में निम्नलिखित अनुमान किये जा सकते हैं :

१- प्रकाशित प्रति - संवत १९६७ में प्रकाशित
२- ह०प्र०सं १६७ - संवत १९३७ के पश्चात्
३- ह०प्र०सं० १८०- संवत १९७२ के पश्चात्

आशय यह कि ह० प्र० सं० १८० की परवर्ती एवं पूर्ण प्रति होने के कारण अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है । इन प्रतियों में वर्तनी के सामान्य पाठ भेदों के अतिरिक्त किसी प्रकार के महत्वपूर्ण पाठ भेद नहीं मिलते ।

१- स्मरण पोथी , पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति पृ० १४ ।
२- ह० प्र०सं० १६८, पृ० ६, ७ ।
३- स्मरण पोथी, पृ० ६ ।
४- वही, पृ० ६३, ६६ ।

२।१४।२ वर्ण्य विषय

इस रचना के प्रथम छंद में प्रभु वंदना कर कवि ने ग्रंथारंभ किया है तथा आगे छंद संख्या २ से २५ तक संसार के ऐसे व्यक्तियों का वर्णन किया गया है जो वाह्याचार में सज्जन तथा अन्तरात्मा में दुर्जन हैं, अथवा ऐसे व्यक्ति जो सांसारिक सुखों के लिए परमार्थ का सर्वथा त्याग कर चुके हैं। इन छंदों में कवि की दृष्टि अलंकार प्रयोग पर अधिक रही है, अत: एक ही विषय अनेक बार पुनरुक्त हुआ है। कवि ने इस विषय में कहा है कि "वामें शांत रसमयवैराग्य के पचीश कवित्त अनुप्रास और यमकालंकारमय बनाये हैं - - - - - उनमें कोइ शास्त्र का सिद्धान्त नहि रखा गया हैपरंतु शब्दालंकार पर विशेष ध्यान दिया गया है।[१] अन्तिम छन्द में कवि ने आत्म परिचय ग्रंथ प्रयोजन तथा रचना काल दे ग्रंथ समाप्त किया है।

२।१४।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	२६
१	२६

२।१४।४ रचनाकाल

इस रचना का रचनाकाल कवि ने संवत १९३७ पुस मास लिखा है।[२]

२।१५ वक्रोक्ति विनोद

२।१५।१ अध्ययन की आधारभूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में प्राप्त होती है, १- उद्धृत रूप में, २- हस्तलिखित प्रति के रूप में। ह०प्र०सं० १९४ में इस रचना के चार छंद सटीक उद्धृत किये गये हैं, जो ह०प्र०सं०

१- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० १५।

२- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० ४०० छं० १६।

१५८ में क्रमश: छंद संख्या ७५, ७६, ८१, ११० के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इन छंदों में सामान्य पाठ भेद भी मिलता है। ह०प्र०सं० १८४ में इस रचना के सटीक चार छंद प्राप्त होते हैं, जिनकी क्रम संख्या १५, १६, १७, १८ दी गयी है। परन्तु ह०प्र०सं० १५८ में इनकी क्रम संख्या क्रमश: ६०, १०८, ७६, ६३ है। साथ ही सामान्य पाठान्तर भी है। यह रचना दो हस्तलिखित प्रतियों में भी प्राप्त होती है। ह०प्र०सं० १५५ में पृ० १ से ४८ तक ११४ छंदों में यह रचना प्राप्त होती है, जिसमें संख्या ८१ के दो छंदों पर लिखे होने के कारण अन्तिम छंद संख्या ११३ ही दी गयी है। इस प्रति में यह रचना सटीक है। पुष्पिका में प्रति का लेखन काल नहीं है। बीच बीच में अनेक छंदों में संशोधन किये गये हैं तथा छंदों के क्रम परिवर्तन के लिए निर्देश दिए गए हैं। इस प्रति में किये गये संशोधन तथा छंदों के क्रम परिवर्तन के निर्देशों का पालन ह०प्र०सं० १५८ में प्राप्त होता है। अत: ह०प्र०सं० १५८ की उक्त प्रति से परवर्ती माना जा सकता है। ह० प्र० सं० १५८ में पृ० १ से ३३ तक यह रचना प्राप्त होती है, जिसके पूर्व दो पृष्ठों में इस ग्रंथ की अनुक्रमणिका तथा दो पृष्ठों पर वक्रोक्ति तथा काव्य से सम्बन्धित ६ सुभाषित श्लोक दिये गये हैं। इस प्रति में अन्तिम छंद संख्या ११७ दी गयी है, जबकि गणना करने पर इस प्रति में कुल मिला कर हमें १२० छंद प्राप्त होते हैं। छंद संख्या ६६ पुनरुक्त है तथा पृ० २६ पर दो छंद हाशिये में अलग से लिखे हुए मिलते हैं। परन्तु पृ० १४ पर दो छंद काट दिये गये हैं, जो पृ० २६ के दोनों छंदों के भिन्न रूप हैं। पृ० १४ पर उक्त छंदों का काटा जाना तथा पृ० २६ पर नये छंदों का लिखा जाना विषय विवेचन की दृष्टि से उचित ही नहीं, आवश्यक भी कहा जा सकता है। इसी प्रकार पृ० १३ पर जहाँ छंद संख्या ६६ पुनरुक्त मिलती है, छंद संख्या ६२ काट कर दो नये छंद लिखे मिलते हैं। वस्तुत: यह परिवर्तन अनावश्यक है। इस प्रकार पृ० १३ के नवीन दो छंदों को अमान्य तथा काटे हुए छंद को मान्य रखा जाय, तो इस प्रति की कुल छंद संख्या ११७ हो जाती है, जो अन्यत्र प्राप्त उल्लेखों में इस रचना की छंद संख्या से मेल खाती है[१] तथा विषय क्रम तथा विवेचन की दृष्टि से भी उचित एवं आवश्यक है।

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६।

यहां यह जान लेना आवश्यक प्रतीत होता है कि ह०प्र०सं० १५५ का एक छंद संख्या ६७ ह०प्र०सं०१५८ में प्राप्त नहीं होता, जो वस्तुत: इस रचना में एक प्रकार से अनावश्यक भी है। प्रस्तुत छंद में अभंग सभंग श्लेष वक्रोक्ति का लक्षण दिया गया है जो इस रचना में मान्य नहीं है। इस प्रकार इस रचना की छंद संख्या ११७ ही मान्य रखी जा सकती है। साथ ही अन्य किसी परवर्ती प्रति के अभाव में ह०प्र०सं० १५८ को इस रचना के अध्ययन की आधार भूत प्रति माना जा सकता है, यद्यपि इस प्रति को भी इस रचना की अंतिम प्रति नहीं माना जा सकता। क्योंकि इस प्रति में अनेक संशोधन आदि मिलते हैं। परन्तु उपलब्ध सामग्री में यही प्रति सर्वाधिक परवर्ती एवं अपेक्षा कृत पूर्ण है।

२।१५।२ वर्ण्य विषय

सर्व प्रथम कवि ने गणपति, शंकर और शारदा की वंदना कर काव्य प्रयोजन, काव्य प्रशंसा तथा काव्य फल के विषय में एक एक दो दो छंद दिये हैं, जिसके पश्चात काव्य हेतु, काव्य लक्षण तथा काव्यांग का विवेचन किया है। आगे काव्य के उत्तम, मध्यम और अधम नामक भेदों के लक्षण उदाहरण दे, अलंकार प्रयोजन, अलंकार लक्षण एवं अलंकार भेद का वर्णन कर वक्रोक्ति की प्रशंसा के कुछ छंद लिख प्रस्तुत रचना की प्रस्तावना पूर्ण की है। तत्पश्चात् प्रस्तुत ग्रंथ का प्रयोजन, तथा नामकरण के विषय में लिख, वक्रोक्ति का लक्षण दिया है। आगे कवि ने वक्रोक्ति के दो भेद बताये हैं : १- काकु वक्रोक्ति, २- श्लेष वक्रोक्ति। काकु वक्रोक्ति का लक्षण और उदाहरण दे कवि ने श्लेष वक्रोक्ति के शब्द मूलक और अर्थ मूलक नामक दो भेद किये हैं। शब्द मूलक श्लेष वक्रोक्ति के अभंग सभंग नाम के दो भेद और किये हैं, जिसमें से द्वितीय के लक्षण उदाहरण दे, कवि ने प्रथम भेद का लक्षण दिये हैं तथा पुन: उसके अविकृत और विकृत नाम के दो भेद किये हैं। आगे इन सब के लक्षण उदाहरण दिये गये हैं तथा कुछ छंदों में अभंग सभंग मिश्रित श्लेष वक्रोक्ति के उदाहरण दे, अर्थ मूलक श्लेष वक्रोक्ति के उदाहरण दिये गये हैं। अंत में कुछ छंदों में प्रस्तुत रचना का प्रयोजन, आत्म परिचय तथा रचना काल दिया गया है।

२।१५।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- पादाकुलक	१
२- सवैया	१७
३- दोहा	४८
४- कवित्त	५१
४	११७

२।१५।४ रचनाकाल

इस ग्रंथ का रचना काल सर्वत्र संवत् १९५४ दिया गया है[१]।

२।१६ गोविन्द ज्ञान बावनी

२।१६।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- उद्धृत रूप में २- हस्तलिखित प्रति के रूप में। ह०प्र०सं० १८२ में फुटकर वैराग्य के कवित्त शीर्षक के नीचे इस रचना के १४ छंद प्राप्त होते हैं, जो प्रस्तुत रचना की ह०प्र०सं०१६२ में क्रमश: छंद संख्या १३, २६, २५, २४, २७, ३१, ३२, २३, ३३, ३४, ३२, ३५, ४५ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रबोध पच्चीसी नामक रचना में इसके कुछ छंद प्राप्त होते हैं। इसके अति रिक्त निम्नलिखित हस्तलिखित प्रतियों में यह रचना प्राप्त होती है :

(१) ह०प्र०सं० १५६ पृ० १ से ११ छंद संख्या ५७

(२) ह०प्र०सं० १६२ पृ० १ से १० छंद संख्या ५६

(३) ह०प्र०सं० १६५ पृ० १९३ से २०५ छंद संख्या ५६

(४) ह० प्र० सं० १९६ पृ० १ से २१ छंद संख्या ५६

१- स्म० पोथी, पृ० ९३, ९६।

इन प्रतियों की पुष्पिकाओं में लिपि काल नहीं है । अत: निम्नलिखित विवेचन के आधार पर ही अन्तिम प्रति के विषय में कुछ अनुमान लगाया जा सकता है ।

ह०प्र०सं० १५६ का छंदोक्रम किसी अन्य प्रति के छंदोक्रम से नहीं मिलता, साथ ही इसमें एक छंद अधिक भी है, जो प्रति के मध्य में ग्रंथ प्रयोजन के रूप में आता है तथा जिसमें कवि ने अपने पुत्र देवजी की मृत्यु को प्रस्तुत रचना का कारण बताया है।[१] देव जी की मृत्यु का समय संवत् १६३७ है, जबकि इस रचना का रचनाकाल कवि ने संवत १६६० लिखा है।[२] अत: यह नहीं माना जा सकता कि यह प्रति संवत १६३७ के आसपास की है । साथ ही इस रचना की अन्य प्रतियों में उक्त छंद नहीं मिलता ।

इसके अतिरिक्त ह० प्र० सं० १६८ में शान्त रस वैराग्य के फुटकर कवित्त संग्रह नाम से एक प्रति प्राप्त हुई है, जिसमें देवजी की मृत्यु का उल्लेख करने वाले छंद के साथ अन्य जो छंद मिलते हैं, उनमें से अधिकांश छंद प्रस्तुत रचना में स्वीकृत किये गये हैं । इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अपने पुत्र देवजी की मृत्यु के पश्चात् कवि ने वैराग्य परक उक्त कवित्त संग्रह तैयार किया होगा, जिसे, संवत १६६० में कुछ नये छंदों को समाविष्ट कर, गोविन्द ज्ञान बावनी नाम प्रदान कर नये ग्रंथ के रूप में तैयार किया होगा । आगे की प्रतियों में देवजी की मृत्यु का उल्लेख करने वाले छंद को निकाल दिया होगा, क्योंकि यह अनावश्यक भी है । इसीलिए यह छंद अन्य किसी प्रति में नहीं मिलता । अत: प्रस्तुत प्रति को इस रचना की प्राप्त प्रतियों में सर्व प्रथम माना जा सकता है ।

ह० प्र० सं० १६२ जिस जिल्द में है उसमें इस रचना की उक्त प्रति के पूर्व प्रारब्ध पचा सा, पावस पयोनिधि तथा षट् ऋतु वर्णन नामक रचनाएं लिखी हुई हैं, जिनका रचना काल क्रमश: १६६६, १६६२, १६६६ है।[३] अत: इस प्रति का लेखन काल सं० १६६६ के पश्चात् होना निश्चित माना जा सकता है ।

१- स्म० पोथी, पृ० ६ ।

२- वही, पृ० ६३, ६६ ।

३- वही, पृ० ६३, ६६, ६७ ।

ह०प्र०सं०१६५ जिस जिल्द में है, उसमें इस रचना की उक्त प्रति से पूर्व 'शृंगार सरोजिनी 'नामक रचना है, जिसका रचनाकाल सं० १६६५ है।[1] अत: इस प्रति का लिपि काल सं० १६६५ के पश्चात् माना जा सकता है, साथ ही ह०प्र०सं० १६२ में वे सभी संशोधन मिल जाते हैं जो ह० प्र० सं० १६५ में किये गये हैं। इन दोनों प्रतियों के छंदों के क्रम में पूर्ण समानता है।

ह०प्र०सं० १६६ में कुल छंद यद्यपि ५६ ही है, परन्तु अन्तिम छंद की संख्या ५७ दी गयी है। छंद संख्या ३६ का छंद इस प्रति में नहीं लिखा। अन्य प्रतियों के साथ इस प्रति के छंदों की तुलना कर के इस प्रति में इस स्थान पर आवश्यक छंद को खोजा जा सकता है, जो निम्नलिखित है :

काहू का करज्जे लेहि रुपिया खरचि खूब, खाइके मिठाइ दुख देन का उपावे है।
खाज कों खरोटी जैसे सुख चित मानत पै, दुगना उपाय दुख मन में न लावे है।
तैसें तुम नाना विधि विषम विलासन में, करिकें कुकर्म अति विपति बढावे है।
गोविद कहत पर चित्त में न जानत क्यों, वपु के बिनासे सोइ सौगुना सतावे है।[2]

इस छंद को प्रस्तुत प्रति में स्वीकार कर लेने से इस रचना की छंद संख्या ५७ हो जाती है, जैसा कि अन्यत्र इसकी छंद संख्या का उल्लेख किया गया है।[3] इस प्रति में अन्य प्रतियों की तुलना में विशेष इस रचना की गुजराती टीका भी मिलती है, जो सम्भवत: सं० १६७१ में गुजराती पत्रिका सुदर्शन में प्रकाशनार्थ भेजने के लिए तैयार की गयी होगी। क्योंकि गुजराती पत्रिका में गुजराती टीका के साथ इस रचना का प्रकाशित होना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है। वैसे उक्त गुजराती पत्रिका में प्रकाशित इस रचना

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, ६७।

२- ह० प्र० सं० १६२, पृ० २ छं० ३५।

३- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६।

की प्रति आज अप्राप्य होने के कारण इस विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कवि ने एक स्थान पर इस रचना के उक्त गुजराती पत्रिका में संवत १९७२ में प्रकाशित होने का उल्लेख किया है[1]। यदि यह अनुमान सत्य हो तो प्रस्तुत प्रति को इस रचना की अंतिम प्रति माना जा सकता है। वैसे भी इस प्रति के संशोधन रहित तथा सर्वाधिक व्यवस्थित होने के कारण उसे प्राप्त प्रतियों में अन्तिम प्रति माना जा सकता है, जिसके आधार पर आगे इस रचना का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

२।१९।२ वर्ण्य विषय

इस रचना के प्रथम छंद में मंगलाचरण कर सात छंदों में संसार की असारता का चित्रण किया गया है तथा ईश्वरोपासना की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है, जिसके पश्चात् देहाभिमान, देह निन्दा, काल, मन निग्रह, विषय-निन्दा, मिथ्या जगत्, नारी-निन्दा, माया-मोह, आत्म-दर्शन, साधु-वैराग्य तथा निर्वेद के विषय में एक एक दो दो छंद मिलते हैं। अन्त में एक छंद में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।१९।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	५७
१	५७

२।१९।४ रचनाकाल

सभी स्थान पर इस ग्रंथ का रचना काल संवत १९९० ही दिया गया है[2], परन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि सम्भवतः यह रचना देवजी की मृत्यु के पश्चात् ही लिखी गयी होगी, जिसके बाद में सं० १९९० में इसके मूल रूप में कुछ अधिक छंदों का समावेश कर, इसे गोविन्द ज्ञान बावनी नाम प्रदान किया होगा। परन्तु यह उपलब्ध सामग्री के आधार पर केवल अनुमान मात्र है, इसे पूर्णतः सत्य नहीं कहा जा सकता।

१- स्मरण पोथी, पृ० २३, प्रशस्ति, पृ० १६।

२- ह०प्र०सं० १९६, पृ० २१, छं० ५७, स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६।

२।१७ पावस पयोनिधि

२।१७।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में प्राप्त होती है : १- उद्धृत रूप में, २- हस्तलिखित प्रतियों के रूप में। ह०प्र०सं०१६४ में इस रचना के पांच छंद प्राप्त होते हैं जो ह०प्र०सं०१५५ में क्रमश: छंद संख्या १, ४, ५, ७, ८ के रूप में मिल जाते हैं। इन छंदों में यत्र तत्र पाठान्तर भी मिलते हैं, जिनमें से कुछ उदाहरणार्थ यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

बादर विभूति अति अंग में विभाय पुनि — ह०प्र०सं० १६४ छं० ३।२
,, ,, वेश ,, लाय ,, — ,, १५५ ,, ५।२
धुरवा धसान सोय कांधन कपद पुनि,
श्याम घटा सोय गजखाल भाय भारे हैं। — ह० प्र०सं० १६४ छं० ३।३
धुरवा धसान जटा फैलिके फवत फनि,
भाल पे त्रिपुंड वो री भाय बहु भारे हैं। — ह०प्र०सं० १५५ छं० ५।३
सुखदाय सुरचाप तिलक लसत भल,
कमनीय कमंडलु सभरे प्रभाये हैं। — ह०प्र०सं० १६४ छं० ४।३
भाल पै तिलक सुरचाप सुखदाय पुनि,
कुंडिका कमन कर तुंबिका प्रभाये हैं। — ह०प्र०सं० १५५ छं० ७।३

ह०प्र०सं० १८६ में इस रचना के आठ छंद प्राप्त होते हैं, जो ह०प्र०सं० १५५ में क्रमश: छंद संख्या १, २, ५, ७, ८, ६, १३, १६ के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इन छंदों में भी सामान्य पाठ भेद मिलता है।

अपने द्वितीय रूप में प्रस्तुत रचना निम्नलिखित तीन हस्तलिखित प्रतियों में मिलती है :

(१) ह०प्र०सं० १५५ पृ० २१४ से २३८ तक छंद संख्या १२६
(२) ह०प्र०सं० १५६ पृ० १३ से २५ तक छंद संख्या ७३
(३) ह०प्र०सं० १६० पृ० १ से २३ तक छंद संख्या १२५

इन तीनों प्रतियों की तुलना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ह०प्र०सं० १५६ अपूर्ण तथा सर्वाधिक प्राचीन है, जबकि ह०प्र०सं० १५५ मध्यवर्ती और ह०प्र०सं० १६० परवर्ती प्रति है। प्रथम प्रति सं० १५६ में इस रचना की केवल द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ तरंग ही प्राप्त होती हैं, जिनकी क्रमश: छंद संख्या २५, २२ और २६ है। इस प्रति के छंदों का क्रम अन्य प्रतियों से नहीं मिलता, जबकि इस प्रति में किये गये संशोधन अन्य प्रतियों में मिल जाते हैं। ह० प्र० सं० १५५ में तथा १६० में छंदों का क्रम समान रूप से मिलता है, ह०प्र०सं० १५५ में प्रथम तरंग का तृतीय छंद काट कर चतुर्थ तरंग के प्रथम छंद के रूप में लिखा गया है। इस प्रति का यह संशोधन ह०प्र०सं० १६० में यथावत स्वीकृत है, अत: ह०प्र०सं० १६० की इस रचना की पूर्ण परवर्ती प्रति माना जा सकता है। ह०प्र०सं० १५५ में प्रथम तरंग के तृतीय छंद के पुनरुक्त होने के कारण छंद संख्या १२६ हो गयी है, वैसे इस रचना की छंद संख्या १२५ है जैसा कि ह०प्र०सं० १६० में है तथा अन्यत्र इसका उल्लेख किया गया है[१]। साथ ही इस प्रति में इस रचना में आये चित्र-काव्योपयुक्त छंदों के चित्र भी दिये गये हैं। अत: इस प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

२।१७।२ वर्ण्य विषय

ह०प्र०सं० १६० में पृ० १ से २३ तक इस रचना के १२५ छंद तथा ७ प्रबन्ध चित्र मिलते हैं। यह रचना चार तरंगों में विभक्त की गयी है, जिसमें क्रमश: ५१, २५, २२ और २७ छंद हैं। प्रथम तरंग का आधार रूपक अलंकार है, जिसका नाम पावस पचासा रखा गया है। इस तरंग में गणेश, कृष्ण, शंकर , ब्रह्मा, इन्द्र, यमराज, काम देव, यज्ञ, पुजारी, पंडित, राजा, मंत्री, राज सभा, कुलवंत नारी, नटी, सेना, युद्ध वीर, पहलवान, शिकारी, गज, अश्व, दूल्हा, पति, प्रिया, विपरीत रति, अभिसारिका, वियोगिनी, नैन, वदन, जौहरी, बजाज, रंगरेज, पसारी, वसंत, बाग, योगी, दावानल, कसाई के साथ पावस के रूपक बांधे हैं। द्वितीय तरंग का आधार अपह्नुति अलंकार है, जिसमें २५ छंद होने के कारण इसका नाम पावस पच्चीसी रखा है। इस तरंग के छन्दों का विषय प्रथम तरंग के समान ही है। तृतीय तरंग का

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति, पृ० १५।

आधारभूत अलंकार संदेह है। २२ छंद होने के कारण इस तरंग का नाम 'वर्षा बाइसी' रखा गया है। द्वितीय तरंग के समान ही इसका विषय है। चतुर्थ तरंग में श्लेष, छेकापह्नुति, वीप्सा, यमक आदि अलंकारों के २६ छंद हैं। इसलिए इसका नाम संकीर्ण छब्बीसी रखा है। विषय बहुत कुछ वे ही हैं जो पूर्व तरंगों में मिलते हैं। अन्तिम छंद में कवि ने आत्म परिचय तथा रचना काल दिया है। इसके पश्चात् कमल-प्रबन्ध, रथ-चक्र प्रबन्ध, पंच-चक्र-प्रबन्ध, अष्ट-नाग-प्रबंध, कदली-वृक्ष-प्रबंध आदि चित्रों में छंद संख्या ११० और १२३ लिखे हैं।

२।१७।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ सवैया	१२
२ कवित्त	११३
२	१२५

२।१७।४ रचनाकाल

इस रचना का रचना काल संवत १९६२ सर्वत्र समान रूप से मिलता है।[१]

२।१८ शृंगार सरोजिनी

२।१८।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध है : १- उद्धृत रूप में, २- हस्तलिखित प्रति के रूप में। ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के ११ छंद उद्धृत मिलते हैं, जिनमें से ६ छंद ह०प्र०सं० १६१ में क्रमशः छंद संख्या ११, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २२ के रूप में मिल जाते हैं, ह० प्र० सं० १६४ के जो दो छंद इस प्रति में नहीं मिलते हैं, वे ह०प्र०सं० १६४ में छंद संख्या ६ और ३१ के रूप में मिल जाते हैं। परन्तु इन छंदों पर

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति पृ० १५।

पेंसिल से 'नथी 'अर्थात् नहीं लिखा है। इसी प्रकार ह०प्र०सं० १६० में इस प्रति के जो १७ छंद मिलते हैं उनमें से १३ छंद ही ह०प्र०सं० १६१ में क्रमश: छंद सं० ११, १२, १४, १५, १६, १७, १८, १६, २०, २२, २५, २३, २१ के रूप में मिलते हैं, शेष चार छंद ह०प्र०सं० १६४ में क्रमश: छंद संख्या ६, १३, २६, ३१ के रूप में मिलते हैं। परन्तु उन पर भी पेंसिल से 'नथी 'लिखा है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि उक्त प्रतियों में छंद कदाचित् ह०प्र०सं० १६४ से ही उद्धृत किये गये हैं, परन्तु उन्हें ह०प्र०सं० १६१ में अस्वीकृत कर दिया है।

अपने द्वितीय रूप में यह रचना निम्नलिखित प्रतियों में प्राप्त होती है :

१- ह०प्र०सं० १६६ पृ० १ से ८६ तक छंद संख्या ३१७
२- ह०प्र०सं० १६४ पृ० १ से १६५ तक छंद संख्या ८८५
३- ह०प्र०सं० १६१ पृ० १ से १०८ तक छंद संख्या ७७६

उक्त प्रतियों में प्रथम प्रति अपूर्ण है, उसमें प्रथम कलिका के अतिरिक्त और किसी कलिका को व्यवस्थित रूप से नहीं लिखा गया, साथ ही इस प्रति का विषय तथा छंद क्रम किसी अन्य पूर्ण प्रति से पूर्णत: नहीं मिलता। इस प्रति की लेखन शैली आदि को देखकर इसे इस रचना के प्रारंभिक काल की प्रति कहा जा सकता है। द्वितीय प्रति में छंद संख्या सर्वाधिक है, साथ ही बीच बीच में अनेक छंद काटे गये हैं तथा नवीन छंदों के लिए स्थान खाली छोड़ दिया गया है। इस प्रति के छंदों का विवरण निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

कलिका नाम	कुल प्राप्त छंद	काटे गये छंद	अलिखित छंद	वास्तविक छंद
प्रथम कलिका	१६७	३७	- -	१३०
द्वितीय	१८७	६	४	१७५
तृतीय	७३	-	-	७३
चतुर्थ	१२६	-	-	१२६
पंचम	३४	-	-	३४

षष्ठ	५७	-	-	५७
सप्तम	१६६	-	-	१६६
अष्टम	१२१	-	-	१२१
			योग	८८५

इस तालिका से इस प्रति में किये गये परिवर्तनों का सहज ही अनुमान किया जा सकता है साथ ही कवि ने बीच बीच में छंदों में पर्याप्त संशोधन किया है। यद्यपि इस प्रति में इस रचना का रचना काल दिया गया है। परन्तु इसकी छंद संख्या ८८५ इसकी उल्लिखित छंद संख्या ८७७ के साथ मेल नहीं खाती है। अत: इस प्रति को इस रचना की अंतिम प्रति के रूप में स्वीकृत नहीं किया जा सकता, साथ ही इसमें किये गये सभी संशोधन ह०प्र०सं० १६१ में मिल जाते हैं और उस प्रति में इस प्रति का उल्लेख भी किया गया है। आशय यह कि इस प्रति को इस रचना की लगभग पूर्ण प्रति मान कर, भी अंतिम प्रति नहीं माना जा सकता। ह० प्र० सं० १६१ के अंत में कवि ने प्रति के लिपि काल का भी उल्लेख इस प्रकार कर दिया है "विक्रम संवत १६६६ के वैशाख शुदि १ बुधवार के दिन ग्रंथ लिखके संपुर्ण किया।"[1] अत: उपलब्ध सामग्री में ह० प्र० सं० १६१ को सर्वाधिक सुव्यवस्थित, सुलिखित तथा परवर्ती होने के कारण अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

ह०प्र०सं० १६१ के अंतिम छंद की संख्या, यद्यपि ८७७ की गयी है, जैसा कि इसकी छंद संख्या का अन्यत्र उल्लेख किया गया है[2], परन्तु छंदों की गणना करने पर इस प्रति की छंद संख्या ७७६ निकलती है। पृ० ३२ पर छंद संख्या २३१ के बाद ३३२ दी गयी है जो आगे चलती है, साथ ही पृ० ५८ पर छंद संख्या ५१५ का उल्लेख नहीं है। अत: इस प्रति में अन्तिम छंद संख्या तथा वास्तविक छंद संख्या में अन्तर

१- ह०प्र०सं० १६१, पृ० १०८।

२- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति, पृ० १५।

है । इसी प्रकार बीच बीच में कुछ नवीन छंदों को दूसरी प्रति से इस प्रति में ले लेने का निर्देश है[१] । तदनुसार यदि इन छंदों की परिगणना भी इस प्रति के छंदों के साथ की जाय तो इस प्रति की अन्तिम छंद संख्या ७८६ हो जाती है, जिसका कलिका क्रम में विवरण निम्न प्रकार से है :

कलिका	मूल छंद	अतिरिक्त छंद	योग
प्रथम	१०३	३	१०६
द्वितीय	१४०	४	१४४
तृतीय	५६	-	५६
चतुर्थ	१०६	-	१०६
पंचम	३२	-	३२
षष्टम	५६	३	६२
सप्तम	१५३	-	१५३
अष्टम	१२१	-	१२१
	७७६	१०	७८६

२।१८।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत रचना का मूल तथा मुख्य विषय नायक नायिका भेद विवेचन है, जिसे कवि ने आठ कलिकाओं में बांट दिया है। प्रथम कलिका में मंगलाचरण के पश्चात सर्वप्रथम रस का लक्षण एवं उसके भेदों का वर्णन है जिसके पश्चात शृंगार रस की उत्तमता का प्रतिपादन कर उसके आलंबन नायक नायिका भेद का सूत्रपात किया है तथा नायिका के लक्षण दे, उसके स्वकीयादि भेद दिये हैं तथा स्वकीया नायिका का विस्तार से इस कलिका में विचार किया गया है । द्वितीय कलिका में कवि ने परकीया

१- ह०प्र०सं० १६१, पृ० ६, १२, २६, ३०, ३१, ७० ।

नायका के विषय में विस्तार से विचार किया है तथा उसके लक्षण उदाहरण दिये हैं। तृतीय कलिका का मुख्य विषय सामान्यता नायका का विवेचन तथा उसके लक्षण उदाहरण है। चतुर्थ कलिका में अनियमित नायकाओं का वर्णन किया है तथा पंचम कलिका में कामशास्त्र तथा सामुद्रिक के अनुसार नायका भेद वर्णन किया है। षष्टम कलिका में नायका की सखी दूती तथा उनके कार्यों पर विचार किया है। एवं सप्तम कलिका में नायक, उसके भेद, उसके सखा, और दूतों का वर्णन है तथा अन्तिम कलिका में शृंगार रस के भेद तथा हाव भाव आदि का विवेचन है। अंत में कुछ छंदों में आत्म परिचय, ग्रंथ प्रयोजन तथा ग्रंथ के रचना काल का उल्लेख कर ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।१८।३ छंद विश्लेषण

कलिका संख्या	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	सप्तम	अष्टम	योग
छंद नाम संख्या									
१ दोहा	४४	७५	३३	२५	१६	३३	८४	५८	३६८
२ कवित्त	४१	२१	१२	४२	१२	१४	४६	४५	२३३
३ सवैया	१९	४७	१२	४२	४	१३	२३	१८	१७८
४ पादाकुलक	२	-	२	-	-	२	-	-	६
५ तोटक	-	१	-		-	-	-	-	१
५	१०६	१४४	५९	१०९	३२	६२	१५३	१२१	७८६

२।१८।४ रचना काल

इस ग्रंथ का रचना काल कवि ने संवत १९[illegible]५ दिया है, जो सर्वत्र समान रूप से मिलता है।[1]

१- स्मरण पोथी, ६३, ६६ प्रशस्ति पृ० १५।

२।१६ षट ऋतु वर्णन

२।१६।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल तीन हस्तलिखित प्रतियों के रूप में प्राप्त होती है, इस रचना के ग्वाल राव कृत षट ऋतु वर्णन नामक रचना के साथ भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है[१] परन्तु वह प्रति प्राप्त नहीं है। अत: प्राप्त तीन प्रतियों में परवर्ती प्रति के आधार पर ही इस रचना का अध्ययन किया जा सकता है। ह०प्र०सं० १५६ में इस रचना के १११ छंद पृ० २७ से ४७ तक मिलते हैं, जिसमें छंदों में यत्र तत्र संशोधन किया गया है तथा १६ छंदों पर पेंसिल का निशान है जो ह०प्र०सं० १५५ में नहीं मिलते, जिसके कारण ह०प्र०सं० १५५ को ह०प्र०सं० १५६ से अधिक परवर्ती माना जा सकता है। ह०प्र०सं० १५५ में कुल छंद संख्या ६५ है जो इस रचना की छंद संख्या के समान ही है[२]। परन्तु इस प्रति में अनेक स्थानों पर संशोधन मिलते हैं जो ह०प्र०सं० १६१ में स्वीकृत रूप में मिल जाते हैं। अत: ह०प्र०सं० १६१ को इस रचना की सर्वाधिक परवर्ती प्रति माना जा सकता है। इस प्रति में किसी प्रकार का संशोधन नहीं मिलता, साथ ही इस रचना विषयक सभी उल्लेखों के अनुरूप है, अत: इस प्रति को इस रचना की अंतिम प्रति भी माना जा सकता है।

२।१६।२ वर्ण्य विषय

ह० प्र० सं० १६१ में पृ० १ से १५ तक ६५ छंदों में यह रचना मिलती है, जिसके प्रथम ७ छंदों में गणपति वंदना तथा ग्रंथ की प्रस्तावना मिलती है, जिसके पश्चात सर्व प्रथम ११ छंदों में वसंत ऋतु का वर्णन है, फिर ११ छंदों में ग्रीष्म तथा १६ छंदों में पावस का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात १५ छंदों में शरद, १२ छंदों में हेमन्त तथा १६ छंदों में शिशिर का वर्णन कर अन्तिम ४ छंदों में ग्रंथ प्रयोजन एवं रचनाकाल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

१- स्मरण पोथी, पृ० ३३।

२- वही, पृ० ६३, ६७, प्रशस्ति, पृ० १५।

२।१६।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१- चौपाई	४
२- दोहा	८
३- सवैया	६
४- कवित्त	७७
४	६५

२।१६।४ रचना काल

इस रचना का रचना काल सर्वत्र समान रूप से संवत् १६६६ लिखा हुआ मिलता है[१]।

२।२०। प्रारब्ध पचासा

२।२०।१ अध्ययन की आधार भुत प्रति

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित तीन हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त होती हैं-

१- ह०प्र०सं० १५५ पृ०१७४ से १८४ तक छंद संख्या ५३
२- ह०प्र०सं० १५६ पृ०१ से १० तक छंद संख्या ५३
३- ह०प्र०सं० १७७ पृ० १५३२ तक छंद संख्या ५३ गुजराती टीका सहित

उक्त तीनों प्रतियों में छंद संख्या की समानता के साथ साथ, उनके क्रम तथा पाठों में भी समानता है, अत: किसी भी प्रति को अध्ययन की आधारभूत प्रति माना जा सकता है, परंतु अंतिम प्रति को परवर्ती प्रति सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि जिस जिल्द में यह प्रति है उसी में इस रचना से पूर्व बोध बत्तीसी

१- स्मरण पोथी, प्रशस्ति, पृ०१५ ।

नामक रचना मिलती है, जिसका रचना काल संवत् १६७२ है,[१] साथ ही इस प्रति में इस रचना की गुजराती टीका भी मिलती है। अत: इसी प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जाता है।

२।२०।२ वर्ण्य विषय

प्रथम पाँच छंदों में मंगलाचरण कर कवि ने यह रचना प्रारंभ की है तथा इसके बाद ४७ छंदों में प्रारब्ध के विषय में विविध प्रकार की सुभाषित सम उक्तियों को छंदोबद्ध किया है, जिनका मुख्य विषय विधि की विचित्र गति, कर्म की गहन गति, प्रतिकूल और अनुकूल दैव, कर्माधीनता, अपरिवर्तनीय कर्म, एवं कर्म प्रशंसा है। अंत में कवि ने एक छंद में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया है।

२।२०।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	५३
१	५३

२।२०।४ रचना काल

प्रस्तुत रचना का रचना काल सर्वत्र समान रूप से संवत् १६६६ मिलता है[२]।

२।२१ श्लेष चंद्रिका

२।२१।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है, १- उद्धृत रूप में, २- हस्तलिखित प्रति के रूप में/ह०प्र०सं० १६४ में इस रचना के चार छंद उद्धृत मिलते हैं, जो ह०प्र०सं० १५५

१- स्मरण पोथी, पृ० ६७, ६७।

२- वही, और ह०प्र०सं० १७७, पृ० ३२।

में क्रमश: छंद संख्या ४२, १०१, ७४, ११० के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रति के उक्त छंदों पर कवि ने लिखा है[1] कि अर्थ के गोविन्द कृत हिन्दी काव्य संग्रह की प्रति देखी, पृ० १०, १२, ७। परन्तु इस ग्रंथ की प्राप्त प्रति के उक्त पृष्ठों पर ये छंद नहीं मिलते। अत: अनुमान लगाया जा सकता है कि इस ग्रंथ की कोई और भी प्रति थी जो आज अप्राप्य है। यह रचना अपने द्वितीय रूप में केवल एक हस्तलिखित प्रति संख्या १५५ में पृ० ५७ से १७३ तक १६० छंदों में प्राप्त होती है, जिसमें इस ग्रंथ की हिन्दी टीका भी है। अन्य किसी प्रति के अभाव में प्रस्तुत प्रति को ही अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जाता है।

प्रस्तुत प्रति में यद्यपि अन्तिम छंद की संख्या १८६ दी गयी है परन्तु छंदों की परिगणना करने पर कुल छंद १६० सिद्ध होते हैं। क्योंकि जहां छंद संख्या १३४, १३८ और १५० अलिखित हैं, वहीं पृ० ६० और १४३ पर क्रमश: एक और दो अतिरिक्त छंद लिखे हैं, जिन पर छंद संख्या नहीं है तथा पृ० ६७ और ६८ पर छंद संख्या ४२ पुनरुक्त है। अत: अन्ततोगत्वा इस प्रति की छंद संख्या १६० सिद्ध होती है। जो प्राप्त उल्लेखों के साथ पूर्णत: मिलती है।[2]

२।२१।२ वर्ण्य विषय

सर्वप्रथम गणपति, सरस्वती और शंकर की वंदना कर कवि ने काव्य प्रयोजन, रस प्रशंसा, तथा कविता कामिनी का रूपक दे, अलंकार की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है जिसके पश्चात अलंकार लक्षण तथा भेद को बता शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार के लक्षण दिये गये हैं। आगे श्लेष अलंकार को उभयालंकार मानते हुए उसका लक्षण दिया गया है। इसके बाद श्लेष के सभंग, अभंग नामक भेद बता कर उसके उदाहरण दिये गये हैं। तत्पश्चात कुवलयानन्द के अनुसार श्लेष के उदाहरणों से ले कर सात अर्थ वाले श्लेष के उदाहरणों तक के ७४ छंद दिये गये हैं। आगे रुद्रट

१- स्मरण पोथी, पृ० ६६, ६७।

२- वही, और ह०प्र०सं० १५५, पृ० १७३।

तथा दंडी के अनुसार श्लेष का विवेचन तथा वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है तथा अंत में आत्म परिचय तथा ग्रंथ के रचना काल के उल्लेख के साथ ग्रंथ पूरा किया गया है ।

२।२१।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ सवैया	६
२ दोहा	९५
३ कवित्त	८६
३	१९०

२।२१।४ रचना काल

प्रस्तुत रचना का रचना काल सर्वत्र समान रूप से संवत् १९६८ उल्लिखित मिलता है[१] ।

२।२२ रत्नावली रहस्य

२।२२।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल एक ही रूप में प्राप्त होती है । हस्तलिखित प्रति के रूप में । इस रचना की जो हस्तलिखित प्रति मिली है, वह अपूर्ण है । अत: इस रचना के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता । प्राप्त उल्लेखों तथा अपूर्ण प्रति के आधार पर ही इस रचना के विषय में कुछ अनुमान किया जा सकता है ।

इस रचना के विषय में प्राप्त उल्लेखों मे से दो स्थानों पर इस की छंद संख्या २५ दी गयी है,[२] जबकि उन स्थानों पर इसका रचना काल नहीं दिया गया । एक स्थान पर इसका रचना काल संवत १९७१ दिया गया है, परन्तु छंद संख्या नहीं दी

१- स्मरण पोथी, पृ० ६६, ६७ और ह०प्र०सं० १५५, पृ० १७२ ।

२- वही, पृ० ६३, प्रशस्ति, पृ० २५ ।

गयी[१]। माधुरी मासिक पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में इस रचना का उल्लेख है,[२] जहां इसकी छंद संख्या १५ दी गयी है तथा रचना काल संवत १६७१। साथ ही अपने शब्द विभूषण नामक ग्रंथ में रत्नावली अलंकार की चर्चा करते हुए कवि ने लिखा है कि इस अलंकार के विशेष भेदों के लिए हमारे बनाये हुए रत्नावली रहस्य को देखो[३]। इन उल्लेखों के आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है, कि कवि ने संवत १६७१ में कदाचित् इस रचना को पूर्ण किया था, जिसकी छंद संख्या १५ या २५ थी, एवं जिसमें रत्नावली अलंकार लक्षण के साथ साथ उसके भेद आदि भी किये गये थे। परन्तु उपलब्ध प्रति में यह रचना अपूर्ण है, अत: इस विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। ह०प्र०सं० १५५ में पृ० १८५ से १६१ तक इस रचना के केवल प्रारंभिक ११ छंद प्राप्त होते हैं, जिसके पश्चात १८ पृष्ट खाली मिलते हैं।

२।२२।२ वर्ण्य विषय

प्रथम दो छंदों में राधा कृष्ण की वंदना कर दो छंदों में रत्नावली अलंकार का लक्षण दिया है तथा आगे सात छंद उदाहरणार्थ दिये गये हैं। बिना किसी पुष्पिका के आगे १८ पृष्ट खाली मिलते हैं।

२।२२।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ दोहा	४
२ कवित्त	७
२	११

२।२२।४ रचनाकाल

कवि ने एक स्थान पर ही केवल इसका रचनाकाल संवत १६७१ दिया है[४]।

१- स्मरण पोथी, पृ० ६७।

२- माधुरी संवत १६७८ श्रावण, पृ० १७६।

३- शब्द विभूषण ह०प्र०सं०१७३ पृ० ४३।

४- स्मरण पोथी, पृ० ६७।

२।२३ बोध बत्तीसी

२।२३।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल निम्नलिखित तीन हस्तलिखित प्रतियों के रूप में उपलब्ध है :

१- ह०प्र०सं० १६६ पृ० २०६ से २१३ तक छंद संख्या ३४
२- ,, १६६ पृ० १ से ७ तक ,, ३४
३- ,, १७६ पृ० १ से ,, ३४ गुजराती टीका सहित

उक्त तीनों प्रतियों में इस रचना के छंदों की संख्या तथा क्रम में पूर्ण समानता है, परन्तु प्रथम दो प्रतियों में यत्र तत्र संशोधन मिलते हैं, जिन्हें तृतीय प्रति में मान्य रखा गया है, साथ ही तृतीय प्रति में गुजराती टीका भी है, अत: इसी प्रति को परवर्ती मान कर अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

२।२३।२ वर्ण्य विषय

प्रथम छंद में मंगलाचरण कर कवि ने यह रचना प्रारम्भ की है तथा आगे उपदेशात्मक ३२ छंद लिखे गये हैं, जिनका मुख्य विषय ईश्वर भक्ति का उपदेश तथा संसार की असारता का प्रतिपादन है। अन्तिम छंद में आत्म परिचय, ग्रंथ प्रयोजन तथा रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।२३।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ कवित्त	३४
१	३४

२।२३।४ रचनाकाल

ग्रंथ के अन्त में इसका रचना काल संवत १६७२ का भद्रपद, शुद ७ रविवार दिया गया है[१] जो अन्यत्र प्राप्त उल्लेखों से मिलता है[२]।

१- ह०प्र०सं० १७६, पृ० १३।
२- स्मरण पोथी. प० ६३. ६७।

२।२४ शब्द विभूषण

२।२४।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल निम्नलिखित दो प्रतियों में प्राप्त होती है :

१- ह०प्र०सं० १५६ पृ० ४६ से ११५ तक छंद संख्या २४६

२- ,, १७३ पृ० १ से १२१ तक छंद संख्या ४०६

उक्त दोनों प्रतियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि द्वितीय प्रति यदि अन्तिम नहीं, तो परवर्ती प्रति अवश्य है, जो प्रथम प्रति के विपरीत पूर्ण प्रति भी कही जा सकती है। प्रथम प्रति में स्वयं कवि ने इस प्रति के अधूरे पन के विषय में लिख दिया है कि शब्द विभूषण मां घणुं वधारी ने बीजी प्रति लखी छे ते जुवो अर्थात् शब्द विभूषण को बहुत कुछ बढ़ा कर दूसरी प्रति में लिखा है, उसे देखो,[1] अत: द्वितीय प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति माना जा सकता है। इस प्रति में इस रचना के ४०४ छंद मिलते हैं, जबकि दो स्थानों पर इसकी छंद संख्या ३८७ लिखी गयी है।[2] और एक स्थान पर इसके छंदों की संख्या के उल्लेख की जगह खाली छोड़ दी गयी है[3]। साथ ही इस प्रति में अनेक स्थानों पर छंद संख्या के लेखन, उससे क्रम आदि में गड़बड़ी है,[4] जिससे अनुमान किया जा सकता है कि यह रचना सर्वप्रथम २४६ छंदों में लिखी गयी, जैसी कि ह०प्र०सं० १५६ में प्राप्त होती है, जिसके पश्चात यह रचना छंद संख्या ३८७ तक विकसित हुई, जैसा कि इसके उल्लेखों से ज्ञात होता है एवं अंत में यह रचना ४०६ छंदों की हुई जैसी कि ह०प्र०सं० १७३ में मिलती है। इस प्रति में यह रचना चार प्रकाशों में विभक्त है जिनकी छंद संख्या इस प्रकार है :

प्रथम प्रकाश -	१४७
द्वितीय ,, -	९६
तृतीय ,, -	८०
चतुर्थ ,, -	८१
	४०४

१- ह०प्र०सं० १५६, पृ० ११४। २- स्मरण पोथी, पृ०९३, प्रशस्ति, पृ० १५।
३- स्मरण पोथी, पृ०९७। ४- देखिए, ह०प्र०सं०१७३, पृ०६, २६, ९२ आदि।

२।२४।२ वर्ण्य विषय

प्रथम प्रकाश में सर्व प्रथम मंगलाचरण कर कवि ने काव्य प्रयोजन, काव्य प्रशंसा, अलंकार की आवश्यकता तथा अलंकार के लक्षण भेद आदि दे कर ग्रंथ नाम हेतु बताया है। जिसके शब्दालंकार का लक्षण दे विस्तार के साथ अनुप्राश का विवेचन किया है।

द्वितीय प्रकाश में यमक, श्लेष और वक्रोक्ति अलंकारों का सविस्तार विवेचन किया है। तृतीय प्रकाश में छेकापन्हुति, अथवा मुकरी, व्यतिरेक, रत्नावली कारनमाला, एकावली, मुक्त केशी, सार, मुद्रा, यथासंख्य, विरोधाभास, पुनरुक्तिवदाभास, लोकोक्ति, छेकोक्ति, अन्योक्ति, पिहित, सूक्ष्म, विवृतोक्ति, गूढोक्ति के लक्षण भेदों का सोदाहरण विवेचन है। चतुर्थ प्रकाश में प्रश्नोत्तर, शासनोत्तर, एकानेकोत्तर, वहिर्लापिका, अन्तर्लापिका, प्रहेलिका तथा चित्र काव्य का विवेचन मिलता है।

अंत में आत्म परिचय, ग्रंथ प्रयोजन तथा रचना काल का उल्लेख कर ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।२४।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	प्रथम प्रकाश,	द्वितीय प्रकाश	तृतीय प्रकाश	चतुर्थ प्रकाश	योग
भुजंगी				१	१
कुंडलिया				१	१
छप्पय			१	६	७
तोटक		१			१
सोरठा	१				१
पादाकुलक		२			२
मोदक	१	१			२
चौपाई	२		६	८	१६
सवैया	२२	१६	१५	१३	६६
कवित्त	४४	३९	१९	८	१०९
दोहा	७७	३८	३९	४४	१९८
११	१४७	९६	८०	८१	४०४

२।२४।४ रचनाकाल

प्रस्तुत ग्रंथ का रचना काल सर्वत्र समान रूप से संवत् १६७४ दिया गया है[१]।

२।२५ भक्ति कल्पद्रुम

२।२५।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल एक हस्तलिखित प्रति के रूप में प्राप्त होती है। ह०प्र०सं० १५३ में पृ० १ से १० तक ६३ छंदों में यह रचना प्राप्त होती है, तथा इस रचना की छंद संख्या ६५ उल्लिखित है,[२] और अन्तिम छंद की संख्या गलती से ६४ दी गयी है। क्योंकि एक छंद पृष्ठ ४ और ६ पर पर पुनरुक्त है, परन्तु छंद संख्या दोनों बार अलग अलग है। अत: अन्तिम छंद संख्या ६४ दी गयी है। उक्त उल्लेखों के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि एक समय इस रचना की छंद संख्या ६५ रही होगी, परन्तु किसी अन्य प्रति के न होने के कारण, उस विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अत: प्राप्त प्रति के आधार पर इस रचना का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

२।२५।२ वर्ण्य विषय

प्रथम ५ छंदों में विष्णु और राम की वंदना कर आगे ७ छंदों में भक्ति और प्रस्तुत ग्रंथ की महिमा का वर्णन किया गया है, जिसके पश्चात भक्ति का लक्षण दे, उसके भेदोपभेद किये गये हैं तथा उनके उदाहरण दिये गये हैं। अन्त में भक्ति और भक्त सम्बन्ध, भक्ति का फल, भक्ति और रस का संबंध आदि विषयों की चर्चा कर रचना काल के उल्लेख के साथ ग्रंथ पूरा किया है।

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६७ प्रशस्ति, पृ० १५।

२- वही।

२।२५।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ चौपाई	२
२ दोहा	१०
३ पादाकुलक	२०
४ कवित्त	३१
४	६३

२।२५।४ रचना काल

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना संवत १६४५ में हुई है[१]।

२।२६ अन्योक्ति अरविन्द

२।२६।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

ह०प्र०सं० १५४ में प्रस्तुत रचना की दो प्रति प्राप्त होती है, प्रथम पृ० १२ से ३६ तक तथा द्वितीय प्रति पृ० ४१ से ६४ तक प्राप्त होती है, जिनमें क्रमश: १३७ और १४० छंद प्राप्त होते हैं। प्रथम प्रति में पृ० १२ से १८ तक ५० छंद मिलते हैं, जिनके अंत में ग्रंथ समाप्ति की सूचक पुष्पिका दी गयी है। बाद में अन्योक्ति अरविन्द का बढारा (विस्तार) नाम से आगे कुछ छंद दिये गये हैं जिनका कुल योग अंत में १३७ आता है। इस प्रति में इस रचना की अन्योक्तियों का वर्गीकरण नहीं किया गया, साथ ही अनेक छंदों में संशोधन भी किया गया है, जो द्वितीय प्रति में यथावत् मिल जाता है। अत: प्रस्तुत प्रति को द्वितीय प्रति को अध्ययन की आधार भूत प्रति माना जा सकता है।

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६५, प्रशस्ति पृ० १५।

Smt. HANSA MEHTA LIBRARY
UNIVERSITY OF BARODA

२।२६।२ वर्ण्य विषय

सर्वप्रथम इस रचना में श्रीपति चरणों की वंदना कर कवि ने अप्रस्तुत प्रशंसालंकार के लक्षण तथा भेदों का विवेचन किया है और उनके उदाहरण दिये हैं। तत्पश्चात सारूप्य निबन्धना अप्रस्तुत प्रशंसा तथा अन्योक्ति का अभेद सिद्ध कर, स्थावर और जंगम नाम से अन्योक्ति के भेद किये हैं तथा जंगम अन्योक्तियों को पुन: खेचर, भूचर और जलचर नाम से बांटा है और इसी क्रम में आगे अन्योक्ति के लक्षण उदाहरण दिये हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

खेचरान्योक्ति	छंदसंख्या	३२
भूचरान्योक्ति	,,	१७
जलचरान्योक्ति	,,	१३
स्थावरान्योक्ति	,,	४४
संकीर्णान्योक्ति	,,	११

खेचरान्योक्तियों का मुख्य विषय सूर्य, चन्द्र, मेघ आदि हैं, जबकि भूचरान्योक्तियों का मुख्य विषय सिंह, गज, ऊंट आदि हैं। जलचरान्योक्ति मुख्यत: समुद्र, सरिता, गंगा आदि विषयों पर हैं तथा स्थावरान्योक्ति पर्वत, वृक्ष, पुष्प आदि पर हैं। संकीर्णान्योक्ति कामदेव, माली, मुरली आदि विषयों पर हैं। अंत में आत्म परिचय तथा ग्रंथ का रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।२६।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ सवैया	८
२ दोहा	२२
३ कवित्त	११०
३	१४०

२।२६।४ रचनाकाल

प्रस्तुत रचना का रचनाकाल संवत १६७८ दिया गया है।[१]

२।२७ अलंकार अंबुधि

२।२७।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना की एक ही अपूर्ण प्रति प्राप्त होती है। ह०प्र०सं० १६५ में पृ० १ से ११ तक ६० छंदों में यह रचना मिलती है, जिसके मुख पृष्ठ पर अथ श्री अलंकार रत्नावली प्रारंभ (अलंकार अंबुधि) लिखा है, साथ ही अन्यत्र इसका नाम अलंकारोदधि दिया गया है।[२] इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि इस रचना के विषय में अन्तिम रूप से निश्चय नहीं कर सके थे। इस ग्रंथ के जहाँ भी उल्लेख मिलते हैं, वहाँ अन्य रचनाओं के समान इस रचना की छंद संख्या तथा रचना काल का उल्लेख नहीं किया गया, जिससे यही लगता है कि कवि इस ग्रंथ को पूरा नहीं कर सका था। उपलब्ध सामग्री के आधार पर इससे अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

२।२७।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत प्रति में कवि ने मंगलाचरण कर काव्य प्रयोजन, काव्य प्रशंसा, काव्य फल, काव्य कारण, काव्य लक्षण, काव्य शरीर आदि का वर्णन कर अलंकार का लक्षण तथा भेदादि दिये हैं और अर्थालंकार के अन्तर्गत उपमालंकार का विवेचन किया है। इसके पश्चात् पृष्ट खाली है। ग्रंथ अपूर्ण रह गया है।

२।२७।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ सवैया	७
२ कवित्त	१०
३ दोहा	४३
३	६०

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६७।
२- ह०प्र०सं० १६५, मुख पृष्ठ ।

२।२७।४ रचनाकाल

अज्ञात ।

२।२८ प्रवीण सागर की बारह लहरी

२।२८।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

राजकोट के महाराज श्री महेरामण सिंह जी ने अपने मित्रों की सहायता से संवत १९३८ में प्रवीण सागर नामक एक प्रबंध काव्य लिखा था,[1] जो महाराज की अकाल मृत्यु के कारण अपूर्ण रह गया था । प्रारम्भ से यह ग्रंथ गुजरात में अत्यधिक जन प्रिय होने के कारण इसे पूर्ण करने के प्रयत्न होते आये हैं । राजकोट के चारण कवि रणमल अदाभाई ने इस ग्रंथ की सर्वप्रथम पूर्ति की, बाद में दलपत राम आदि दुवारा भी इस ग्रंथ की पूर्ति के प्रयास हुए हैं । संवत १९४३ में अहमदाबाद के श्री हरि शंकर करुणा शंकर पाठक के आग्रह पर गोविन्द गिल्ला भाई ने इस ग्रंथ की पूर्ति तथा टीका करने का निश्चय किया[2] और संवत १९४५ इस ग्रंथ की पूर्ति के लिए बारह लहरों की रचना की है,[3] जो संवत् १९४८ में अहमदाबाद से प्रकाशित हुई । प्रस्तुत रचना की एक हस्तलिखित प्रति भी प्राप्त हुई है । इस प्रकार यह रचना दो रूपों में उपलब्ध होती है - १- प्रकाशित प्रति के रूप में, २- हस्तलिखित प्रति के रूप में । इन प्रतियों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है । अत: यहां ह०प्र०सं० २०२ के आधार ही इस रचना का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है ।

२।२८।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत प्रति में प्रवीण सागर ७३ वी लहर से लेकर ८४ वी लहर तक प्राप्त होता है । ७३ वीं लहर में प्रबन्ध की नायिका कला प्रवीण की विरह दशा का चित्रण है, ७४ वीं लहर में कला प्रवीण की सखी कुसुमावलि उसेसमझाती है तथा

१- प्रवीण सागर सं० गणपति शंकर जयशंकर शास्त्री, पृ० ६ संपादकीय ।

२- स्मरण पोथी, पृ० ११ ।

३- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० २३ ।

दोनो सखियों की विरह, दुख और प्रेम विषयक चर्चा ७७ वीं लहर तक चलती रहती है, जहां कला प्रवीण योगिनी का भेष धारण करती है, उसके माता पिता उसे समझाते हैं परन्तु वह शिव की आराधना के निश्चय पर दृढ़ रहती है । ७८ वीं लहर से कथा प्रबन्ध के नायक सागर को ले कर चलती है। वह जंगल में एक सिद्ध से मिलता है जो उसके प्रेम की परीक्षा कर, उसे और उसके मित्रों के पूर्व जन्म का हाल बताता है तथा इस जीवन में प्रिया वियोग का कारण बताता है ।आगे सिद्ध अपनी दिव्य दृष्टि से कला प्रवीण की करुणाजनक दशा देख कर स्वयं कैलाश पर उमा शिव को प्रसन्न करने जाता है । भगवान शंकर सिद्ध की प्रार्थना से प्रसन्न हो आगामी शिव रात्रि को सागर को दर्शन देने तथा उसके दुखों का नाश करने का वरदान देते हैं । यह समाचार सिद्ध सागर को देता है, और सागर प्रसंन हो अपने नगर की ओर प्रस्थान करता है । इसके पश्चात शिव रात्रि के दिन सागर को शिव के दर्शन होते हैं, और कला प्रवीन से मिलन होता है । बाद में दोनो शिव के शाप से मुक्त हो कैलाश को प्रस्थान करते हैं । इस प्रकार इस ग्रंथ की समाप्ति होती है ।

२।२८।३ छंद विश्लेषण

लहर संख्या	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	योग
छंद का नाम													
१ जेकरी												१	१
२ अग्विणी										१			१
३ प्लवंग												२	२
४ कुंडलिया				१						१			२
५ हरिगीत											४		४
६ छप्पय									२	१		१	४
७ पद्धरी												५	५
८ त्रिभंगी												५	५
९ सोरठा	४										१		५
१०अलका										३		३	६

लहर संख्या	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	योग
११मोतीदाम											७		७
१२चौपाया			६										६
१३गाहा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१२
१४चरनाकुल		७			४						६		१७
१५सवैया	१२	१	१४		१	१०	१०	१०		१			५०
१६कवित्त	६	४	२	१	५	१०	१०	८	४	१०		३	६६
१७भुजंगी	१२	५		११		१५				७		५	५५
१८चौपाई							४	८	८	५	२०	२२	६७
१९तोटक		१५	७	२४	११						१२	५	७४
२०पादाकुलक		१६	७	२४	१७	६	७	२३	१५	२५	१७	६	१७६
२१दोहा	८	१६	८	१८	२२	६	१८	२३	१६	१३	३१	२४	२०६
२१	४६	६५	४८	८०	७१	५१	५०	६३	४९	६९	९९	८३	७७४

२।२८।४ रचनाकाल

प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १९४५ है ।[1]

२।२९। समस्या पूर्ति प्रदीप:-

२।२९।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपों में प्राप्त होती है : १- उद्धृत रूप में, २- हस्तलिखित प्रति के रूप में । ह०प्र०सं० १९४ में इस रचना के ७ छंद मिलते हैं जो ह०प्र०सं० १९२ में क्रमश: छंद संख्या २, ३, ५, १५, १८, २३, ५५ के रूप में मिल जाते हैं । ह०प्र०सं०१९०

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६५ ।

में इस रचना के २५ छंद उद्धृत किये गये हैं, जो ह०प्र०सं० १६२ में क्रमश: छंद संख्या १, २, ३, ४, ५, १३, १५, १६, १७, १८, २०, २३, २८, २६, ३६, ६१, ६४, ६७, ७५, ७६, ८०, १२४, १२६, १४६ तथा ३६ रसिक मित्र के छंद के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। इन छंदों में यत्र तत्र थोड़ा पाठ भेद मिलता है। ह०प्र०सं० १६२ में पृ० १ से ६१ तक २३५ छंदों में यह रचना प्राप्त होती है। इस रचना के अनेक छंद काशी कवि समाज, काशी कवि मंडल आदि के समस्या पूर्ति संग्रहों में प्रकाशित हो चुके हैं, साथ ही इसके कुछ छंद विवेक विलास, शिखनखचंद्रिका आदि रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं।

ह०प्र०सं० १६२ के पृ० १ से ४ तक इस रचना की अनुक्रमणिका दी गयी है तथा पुन: पृ० १ से ४५ तक काशी कवि समाज से प्राप्त समस्याओं तथा उन पर लिखे अपने छंदों का संग्रह है, जिनकी संख्या १७१ है। आगे काशी कवि मंडल की समस्याओं पर लिखे १६ छंद हैं, जो पृ० ४५ से ५२ तक प्राप्त होते हैं। तदनन्तर पटना कवि समाज आदि साहित्यिक संस्थाओं तथा कानपुर के रसिक मित्र आदि पत्रिकाओं से प्राप्त होनेवाली समस्याओं पर लिखे गये छंदों का संग्रह किया गया है। पृ० ६० पर इस ग्रंथ के मंगलाचरण तथा कवि वचन के छंद दिये गये हैं। इस प्रकार इस प्रति के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रति इस रचना की अंतिम प्रति नहीं है। परंतु किसी अन्य प्रति के अभाव में इसे ही अध्ययन की आधार भूत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

२।२६।२ वर्ण्य विषय

ऊपर दिये गये विवरण से स्पष्ट है कि इस रचना के विषय के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस रचना में समय समय पर प्राप्त होने वाली समस्याओं पर लिखे गये छंदों का संग्रह मात्र है। अत: वस्तुत: इस रचना का कोई विषय नहीं माना जा सकता। इस रचना में प्राप्त सभी छंद प्रधानत: शृंगार परक हैं।

२।२६।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ दोहा	५
२ सवैया	५६
३ कवित्त	१७१
३	२३५

२।२६।४ रचनाकाल

प्रस्तुत ग्रंथ के कवि वचन में कवि ने इसका रचना काल संवत १६५० से १६६५ दिया है,[१] परन्तु उसके पश्चात कुछ नवीन छंदों का समावेश कर लेने के कारण इसका रचना काल अन्यत्र संवत १६५० से १६७० दिया है,[२] जो प्रस्तुत प्रति को देखते हुए अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है ।

२।३० साहित्य चिंतामणि प्रथम भाग, किंवा नीति विनोद

२।३०।१ अध्ययन की आधार भुत प्रति

प्रस्तुत रचना दो रूपोंमें प्राप्त होती है - १- उद्धृत रूप में , २- हस्तलिखित प्रति के रूप में । ह० प्र०सं० १६४ में इस रचना के १४ छंद प्राप्त होते हैं जो क्रमश: छंद संख्या १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, २४४, २५५, २५७, ५२६, ६१०, ८४४, ८४१ के रूप में ह०प्र०सं० २०७ में मिल जाते हैं । ह० प्र०सं० १८३ में इस रचना के सात छंद उद्धृत मिलते हैं, जो ह० प्र० सं० २०७ में क्रमश: छंद संख्या १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६ के रूप में मिल जाते हैं । इन छंदों में कोई विशेष पाठ भेद नहीं मिलता । प्रस्तुत रचना अपने द्वितीय रूप में ह०प्र०सं० २०७ में २७६

१- ह०प्र०सं० १६२, पृ० ६० छं० २२८ ।

२- स्मरण पोथी, पृ० ६६ ।

पृष्ठों में प्राप्त होती है, साथ ही इसी प्रति में ५ स्फुट पत्र और हैं जिनमें इस रचना के कुछ छंद लिखे हुए हैं। प्रस्तुत प्रति के पृ० २७५ पर इस रचना की अंतिम छंद संख्या १२१५ लिखी है जबकि इसकी वास्तविक छंद संख्या १२२० है। साथ ही इस प्रति के अनेक पृष्ठों[1] पर बाद में कुछ छंद लिखे गये हैं, जिनकी कुल संख्या २८ है। इसी प्रकार इस प्रति के पृ० २७१ से २७५ तक इस रचना के २१ छंद मिलते हैं। अत: इस प्रति में प्राप्त छंदों की संख्या १२२०+ २८ + २१ - १२६९ होती है। गोविन्द गृंथमाला में इस रचना के विषय में लिखते हुए कवि ने इसकी छंद संख्या १०००[2] लिखी है। जबकि अन्यत्र सभी स्थानों पर इसकी छंद संख्या १४०० दी गयी है[3]। जिससे अनुमान किया जा सकता है कि गोविन्द गृंथमाला के प्रकाशन काल तक इस रचना की छंद संख्या १००० ही रही होगी, बाद में यह संग्रह विकसित होता गया जिसके प्रस्तुत प्रति में १२६९ छंद उपलब्ध है। परन्तु १४०० छंद वाली प्रति या तो अप्राप्य है या कवि इस गृंथ की छंद संख्या १४०० तक कर ही नहीं पाया था। वस्तुस्थिति जो भी हो, परन्तु किसी अन्य प्रति के न मिलने के कारण इसी प्रति को इस रचना के अध्ययन की आधार भूत प्रति माना जा सकता है।

२।३०।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत रचना प्राचीन एवं कवि के समकालीन कवियों की नीति विषयक कविताओं का संग्रह है[4], जिसमें ६०३ छंद अन्य कवियों के हैं, ३८२ छंद गोविन्द गिल्ला भाई के हैं तथा २८४ छंद ऐसे हैं जिनके कवि अज्ञात हैं। सर्वप्रथम कवि ने प्रथम ८७ छंदों में विविध देवी देवताओं की वंदना के छंद संगृहीत किये हैं, फिर ईश्वर महिमा, भक्ति, विश्वास आदि के विषयों के कुछ छंद दे प्रस्तुत गृंथ का प्रयोजन बताया

१- ह० प्र०सं० पृ० ७, २०, ४७, १०५, १६३ आदि।

२- गोविन्द गृंथमाला, पृ० ४४२।

३- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६, प्रशस्ति, पृ० १५।

४- कवियों की नामावली के लिए देखिए परिशिष्ट सं० चतुर्थ अ।

है और साहित्य का लक्षण दे प्रस्तुत ग्रंथ के नाम 'साहित्य चिन्तामणि 'की सार्थकता बताई है। तत्पश्चात ग्रंथ प्रारंभ हो होता है और नीति, विद्या, काव्य कवि, भाषा, सुभाषित आदि के विषय में छंद दिये हैं और आगे प्रेम, स्वार्थ, परोपकार, दया, धर्म, अधर्म, सत्य, दान, यश, विवेक, उद्यम, भाग्य, विनय, व्यवहार चतुरार्य, सदाचार आदि विषयों पर अनेक छंद मिलते हैं। आगे अनेक प्रकार की अन्योक्तियों का संग्रह किया गया है तथा अन्त में प्रस्तुत ग्रंथ का प्रयोजन आत्म परिचय तथा रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है।

२।३०।३ छंद विश्लेषण

छंद का नाम	संख्या
१ झूलणा	१
२ कुंडलिया	२६
३ दोहा	२६
४ छप्पय	६५
५ सवैया	३२०
६ कवित्त	७६८
६	१२६६

२।३०।४ रचनाकाल

प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल सं० १६७२ दिया गया है[१]।

२।३१ गोविन्द हजारा

२।३१।१ अध्ययन की आधार भूत प्रति

प्रस्तुत रचना केवल दो हस्तलिखित प्रतियों के रूप में प्राप्त होती हैं :

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६।

१- ह०प्र०सं० १७२ पृ० १ से २८८ तक छंद संख्या १०५२ ।

२- ह०प्र०सं० पृ० १ से २५१ छंद संख्या ११११ ।

प्रथम प्रति में ~~क्रम~~ पृ० ५७, ५८, १३५, १३६, २४६, २५०, २५१, २५२ नहीं हैं, साथ ही अनेक स्थानों पर संशोधन आदि मिलते हैं।अत: द्वितीय प्रति को ही अध्ययन की आधार भुत प्रति के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है । द्वितीय प्रति के छहों प्रकरणों में निम्न लिखित छंद संख्या लिखी हुई मिलती है :

प्रथम प्रकरण	१७३
द्वितीय ,,	२५४
तृतीय ,,	२०३
चतुर्थ ,,	८७
पंचम ,,	१३६
षष्टम ,,	२४५
	११०१

इस ग्रंथ की छंद संख्या अन्यत्र भी ११०१ ही दी गयी है[१]। परन्तु गणना करने पर पता चलता है कि तृतीय प्रकरण में ४ पंचम प्रकरण में १ और षष्टम प्रकरण में ७ छंद बाद में हांसिये में लिखे गये हैं/अत: प्रस्तुत रचना की अन्तिम छंद संख्या १११३ हो जाती है, जिनमें से ६५७ गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा रचित हैं :

२८० छंद, अन्य १४० कवियों द्वारा रचित हैं[२]।

१७६ छंद, अज्ञात कवियों द्वारा रचित हैं ।

१११३

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६६ प्रशस्ति पृ० १५ ।

२- कवियों की नामावली के लिए देखिए परिशिष्ट सं० चतुर्थक।

२।३।१।२ वर्ण्य विषय

प्रस्तुत ग्रंथ छ: प्रकरणों में विभक्त है । प्रथम प्रकरण में सर्वप्रथम मंगलाचरण की आवश्यकता, उसका लक्षण तथा भेद दे कर कवि ने मंगलाचरण किया है तथा भाषा का लक्षण दे हिन्दी भाषा का लक्षण तथा उसके भेद दिये गये हैं । इसके पश्चात काव्य के लक्षण भेद दे, तुक विवेचन प्रारम्भ किया है, जिसके पश्चात वाणी और उक्ति का विवेचन किया गया है । अन्त में सवैया और कवित्त छन्दों का विस्तारपूर्वक विवेचन कर प्रकरण पूरा किया गया है ।

द्वितीय प्रकरण में अनुप्राशालंकार का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है :
तृतीय प्रकरण में यमक अलंकार का सविस्तार विवेचन है ।
चतुर्थ प्रकरण में श्लेष अलंकार का सविस्तार विवेचन है ।
पंचम प्रकरण में रत्नावली, वक्रोक्ति तथा मुकरी का विवेचन है ।

षष्टम प्रकरण में यथासंख्य, परिसंख्या, मुद्रा, पिहित, सूक्ष्म, कारनमाला, एकावली, सार, विवृतोक्ति, गूढोक्ति, लोकोक्ति, गूढ काव्य तथा चित्र काव्य का विवेचन है । अन्त में ग्रंथ का प्रयोजन, आत्म परिचय तथा रचना काल दे ग्रंथ पूरा किया गया है । इस ग्रंथ में अलंकार आदि के विवेचन में गद्य का प्रयोग किया है तथा कठिन छंदों की टीका भी दी है तथा हिन्दी के कवियों के जिन ग्रंथों से किसी सिद्धान्त को लिया है उसका नाम आदि दिया है । इसी प्रकार इस रचना में २५ ग्रंथों का उल्लेख है, जिनके रचयिताओं का नामोल्लेख भी किया, साथ ही १२ ऐसे ग्रंथों का उल्लेख है जिनके साथ उनके रचयिताओं का नामोल्लेख नहीं है ।[१]

२।३।१।३ छंद विश्लेषण

१- देखिए परिशिष्ट सं० चतुर्थ ब, स ।

छंद का नाम	प्रकरण	प्रथम	द्वितीय	तृ०	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	योग
१ सोरठा							१	१
२ भुजंगी							१	१
३ मोदक				१				१
४ पादाकुलक				२				२
५ तोटक		२		१				३
६ कुंडलिया		१		१		१		३
७ छप्पय		१					२५	२६
८ चौपाई		१				५६	१९	७६
९ सवैया		३९	२२	१३२	६	४	५४	२३७
१०दोहा		१०२	१८	९	१६	११	१०१	२५७
११ कवित्त		४७	२१४	६२	६५	६८	५०	५०६
११		१७३	२५४	२०७	८७	१४०	२५२	१११३

२।३।१४ रचनाकाल

इस संग्रह का रचनाकाल सं० १९७५ सर्वत्र समान रूप से मिलता है[१]।

३।० शेष साहित्य

अब तक गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त उल्लिखित एवं उपलब्ध कृतियों का परिचय प्राप्त किया गया है। आगे उनके उस सभी साहित्य पर संक्षेपतः विचार किया जा रहा है, जो अपने आप में विशेष महत्वपूर्ण न होते हुए भी गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व पर किसी न किसी रूप में प्रकाश अवश्य डालता है। जैसे

१- स्मरण पोथी, पृ० ६३, ६७, प्रशस्ति पृ० १५, ह०प्र०सं० २०३ पृ० २५०।

भी इस साहित्य का एक अंश ऐसा भी है जो हिन्दी के प्राचीन कवियों पर विशेष रूप से प्रकाश डालता है ।

३।१ सामान्य काव्य ग्रंथ

गोविन्द गिल्ला भाई की अनुल्लिखित परन्तु उपलब्ध कृतियों में, केवल 'पश वर्णन' नाम की एक लघु रचना ऐसी है जिसके छंद अन्य किसी उपरोक्त रचना में नहीं मिलते । ह० प्र० सं० १४७ में भावनगर के किन्हीं देसाई छगनलाल संत तोषराम की प्रशस्ति में ११ छंदों में यह रचना मिलती है, जिसमें ६ कवित्त, २ छप्पय, २ दोहा, १ सवैया है । इसका रचना काल इस रचना में नहीं मिलता, साथ ही इसका कहीं उल्लेख न होने के कारण, इसके विषय में विशेष कुछ भी नहीं कहा जा सकता । स्मरण पोथी में एक स्थान पर सं० १९२७ में भाव नगर के उक्त सज्जन से कुछ पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप प्राप्त होने का उल्लेख है ।[१] सम्भवत: उसी समय कवि ने उक्त सज्जन की प्रशस्ति में कुछ छंद लिखे होंगे , जो प्रस्तुत प्रति में मिलते हैं ।

इस रचना के अतिरिक्त सुबोध शतक और आशक पच्चीसी नामक दो रचनाओं की अपूर्ण प्रति ह०प्र०सं० १५७ और १६६ में प्राप्त होती है, परन्तु इन रचनाओं के सभी छंद अन्य रचनाओं में मिल जाते हैं । अत: अनुमान यही किया जा सकता है कि कदाचित् कवि उक्त रचनाओं के नाम से कुछ नीति और कुछ प्रेम विषयक छंदों का संग्रह तैयार करना चाहता था, परन्तु नीति विनोद जैसे नीति विषयक संग्रह तथा गोविन्द हजारा जैसे शृंगार विषयक संग्रह के पश्चात इन संग्रहों की आवश्यकता प्रतीत न होने के कारण उक्त प्रतियां अपूर्ण ही छोड़ दी गयी होंगी ।

इनके अतिरिक्त और जो काव्य संग्रह जैसे शान्त रस वैराग्य के फुटकर कवित्त आदि मिलते हैं, उनके विषय में भी वही कहा जा सकता है जो इन रचनाओं के विषय में कहा गया है ।

१- स्मरण पोथी, पृ० ५ ।

३।२ गोविन्द गद्य साहित्य

ह०प्र०सं० २०५ में "गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह, भाग प्रथम "नाम से गोविन्द गिल्ला भाई की कुछ ऐसी रचनाएं अपूर्ण अवस्था में मिलती हैं जिनका उल्लेख है, साथ ही कुछ ऐसी रचनाएं भी मिलती हैं जिनका उल्लेख नहीं मिलता। प्रथम प्रकार की रचनाएं इस प्रकार हैं : १- एकाक्षरी कोष, २- अनेकाक्षरी कोष, ३- अनेकार्थ कोष ४ अंक अभिधान मंजरी, ५ वात्सायन काम सूत्र की अनुक्रमणिका इनके साथ साथ काव्यप्रकाश तथा साहित्य दर्पण के अनुवाद का कुछ अंश भी मिलता है।

इस प्रति में ऐसा साहित्य, जो उल्लिखित नहीं है, वह इस प्रकार मिलता है :

पिंगल मतानुसार शुभाशुभ वर्ण विचार पृ० १३ से १४ तक

इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में प्रयुक्त आभूषणों के नाम, उपमा लक्षण विविध ग्रंथों से तथा अनेक हस्तलिखित ग्रंथों की सूचियां दी गयी हैं।

इस ग्रंथ के अंत में ग्रंथ के रचना काल आदि का उल्लेख नहीं है। वस्तुत: यह प्रति हिन्दी साहित्य तथा भाषा सम्बन्धी अनेक तथ्यों की संग्रह है। इसे ग्रंथ नहीं कहा जा सकता।

३।३ उपलब्ध गुजराती अनुवाद

१- हस्तलिखित प्रति सं० २०४ में संस्कृत के अमरकोष का गुजराती अनुवाद अपूर्ण मिलता है।

२- हस्तलिखित प्रति सं० १६७ में संस्कृत के अमरशतक का गुजराती अनुवाद मिलता है।

३- हस्तलिखित प्रति सं० १६८ में संस्कृत के चोर पंचासिका ग्रंथ का गुजराती अनुवाद मिलता है।

३।४ गुजराती टीका

१- शिवराज भूषण की गुजराती टीका ह०प्र०सं० १०१ में प्राप्त होती है, जिसमें १२३ पृष्ठों पर भूषण के ३६५ छंदों पर गुजराती टीका लिखी है। इस टीका

के विषय में कवि ने एक स्थान पर लिखा है कि सं० १९५८ में सेठ पुरुषोत्तम के आग्रह से इस ग्रंथ की गुजराती टीका लिखी थी[१]।

२- शिवराज शतक की गुजराती टीका की एक प्रकाशित प्रति प्राप्त हुई है, जिसमें भूषण के १०० छंदों पर गुजराती टीका है। इस टीकासे पूर्व ५४ पृष्ठों में कवि ने भूषण के जीवन तथा काव्य के विषय में विद्वत्तापूर्ण भूमिका दी है। प्रस्तुत ग्रंथ भावनगर से संवत १९७२ में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ की टीका कवि ने सं० १९७१ में लिखी थी[२]।

३- प्रवीण सागर की गुजराती टीका, संवत १९४५ में लिखी तथा अहमदाबाद से प्रकाशित हुई[३] है जो उपलब्ध है।

४- प्रबोध पच्चीसी की गुजराती टीका, ह०प्र०सं० १६७, १८० में प्राप्त है।

५- गोविन्द ज्ञान बावनी की गुजराती टीका, ह०प्र०सं० १६६ में प्राप्त है।

६- बोध बत्तीसी की गुजराती टीका ह० प्र०सं० १७६ में प्राप्त है।

७- प्रारब्ध पचासा की गुजराती टीका , ह०प्र०सं० १७७ में प्राप्त है।

८- विष्णु विनय पच्चीसी की गुजराती टीका, ह०प्र०सं० १७८ में प्राप्त है।

९- परब्रह्म पच्चीसी की गुजराती टीका, ह०प्र०सं० १७९ में प्राप्त है।

३।५ हिन्दी टीका

१- प्रबोध पच्चीसी की हिन्दी टीका गोविन्द ग्रंथमाला में प्रकाशित मिलती है[४]। शेष निम्नलिखित ग्रंथों की हिन्दी टीका सम्पूर्ण ग्रंथों पर नहीं है, वरन् व्याख्या सापेक्ष अंशों पर ही टीका लिखी गयी है।

१- स्मरण पोथी, पृ० १५।

२- वही, पृ० २३, ३६।

३- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० २३, स्मरण पोथी, पृ० ११, ३६।

४- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० ३८५ से ४००।

२- शब्द विभूषण की हिन्दी टीका ह०प्र०सं० १५६
३- गोविन्द हजारा ,, ,, २०३
४- अन्योक्ति अरविन्द ,, ,, १५४
५- वक्रोक्ति विनोद ,, ,, १५५
६- श्लेष चंद्रिका ,, ,, १५५
७- रत्नावली रहस्य ,, ,, १५५
८- नैन मंजरी ,, ,, गोविन्द ग्रंथमाला पृ०३०५ आदि

३।६ भूमिका तथा संपादन

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा अनेक हिन्दी ग्रंथों के विषय में प्राप्त उल्लेखों की चर्चा पहले की जा चुकी है। परन्तु शिवराज शतक तथा गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग के अतिरिक्त अन्य कोई इनका द्वारा संपादित ग्रंथ नहीं मिलता। उक्त दोनों ग्रंथों में कवि ने विस्तार पूर्वक भूमिका लिखी है।

४। उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा लिखित तथा उपलब्ध समस्त साहित्य का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे आगे उनके कृतित्व के विषय में विचार किया जा सके। यहां उनके द्वारा संग्रहीत प्राचीन साहित्य तथा प्राचीन कवियों के विषय में संग्रहीत सामग्री के विषय में कुछ भी विचार नहीं किया गया। परन्तु यहां यह कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने हिन्दी के कवि और उनके द्वारा लिखित साहित्य के विषय में जो सामग्री तथा साहित्य एकत्रित किया था, यद्यपि संपूर्णत: उपलब्ध नहीं है, तथापि जितना भी मिला है, वह उनके कृतित्व के एक महत्वपूर्ण पक्ष का उद्घाटन करता है, जिसके अध्ययन के बिना उनके कृतित्व का अध्ययन पूर्ण नहीं कहा जा सकता। अत: आगे गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के कलापक्ष पर भी विचार किया जा सकता है।